मैंने आह भर कर कहा "यह अल्लाह की क़ुदरत है। बाबाजान आपका कहना बजा है मगर अब कौन इन बातों का लिहाज़ करता है, अभी आंखों के साम्हने ही इसका नमूना देख लीजिये कि मुल्ला साहब की राय सोने की शक्ल देखते ही बदल गई और फिर उन्होंने एक लफ्ज़ भी आप से न पूछा"।

वालिद ने कहा "मैं जो तुम से कहता हूं कि अगर किसी के पास दौलत काफ़ी हो तो वह तमाम दुनियां पर हुकूमत कर सकता है। सिकन्दर कौन था? जहां तक उसका हाल मिलता है यही साबित है कि वह एक छोटे से मुल्क का हाकिम था जो इसमुल्क की बादशाहत का निस्फ़ भी न था, ताहम् जब जिन्नों की रहमत उस पर हुई तो उसने अपने सिहर के ज़ोर से उन पर की हुकूमत हासिल की, यहां तक कि उन्होंने तमाम जहान के गड़े हुए खजाने उसके निगाह के रूबरू खोल दिये। बस तब उसे कौन रोक सकता था? क्या यह तमाम बातें हमारे सादिक़ क़ुरान शरीफ़ में नहीं लिखी हैं"?

मैंने कहा "आप बजा फर्माते हैं, पस इन पर शक करना निहायत कुफ्र है मगर वह देखिये मुल्लासाहब शरह की किताब बगल में दाबे चले आते हैं मैं जाकर अज़ीमां को तयार करताहूं"।

मैंने अज़ीमां के पास जा और उसके गले में हाथ डाल कर कहा "प्यारी, शुक्र खुदा का है कि वह वक्त आ गया कि जब अल्लाताला की बर्कत और बाबाजान के हुकम से तुम हमेशा के लिये मेरी होओगी, और जब हमारा तुम्हारा रिश्ता शरह की रू से कायम होगया तो ताउम्र मुझसे और तुमसे इलहदगी न होगी। मुल्ला आगया है, फ़कत तुमारी इजाज़त की देरहै निकाह इसी दम होजायगा अब ज्यादा देर करना फ़ज़ूल है मैं इश्क़ की आग से जलरहा हूं"

उसने कहा "इतनी जल्दी? नहीं नहीं घर तो पहुंच लेने दीजिये। आप के बाबाजान मेरी इस रज़ामन्दी पर अपने दिल में क्या कहेंगे'?

मैने कहा "वे राज़ी हैं और मुझे पर्वानगी दे चुके हैं बल्कि उन्होंने खुद मुल्ला को बुलवाया है और उसे कायल कर निकाह करने को मजबूर किया है फ़कत वे मेरी और तुम्हारी इन्तिज़ारी में बैठे हैं कि शरह पढ़कर तुम्हें हमेशा के लिये मेरी बीबी कायम कर देवें।

उसने कहा "अफ़सोस मैं तो दूसरे की बीबी हूं और नहीं जानती कि यह क्योंकर हो सकेगा" ?

मैंने कहा "अज़ीमां तुम उस कमबख़्त शादी को फ़रामोश करो अगर ऐसे २ उज्‌र करोगी तो मेरे जान पर सदमा पहुंचेगा, मैं क्या तुमारा गुलाम नहीं हूं ? हम लोग अब बहुत दूर निकल आये और तुम्हारा वह कम्बख़्त शौहर तुम्हें हर्गिज़ नहीं पा सकता । बस अब ऐसी बातें न करो क्योंकि मुझे बड़ा ताअज्जुब होता है कि औव्वल तो तुम मेरे साथ वहां से निकल आईं और अब निकाह से इनकार करती हो?" ।

उसने कहा "नहीं नहीं आप हर्गिज़ ऐसा न कहिये, आपने मुझे उस बेइज़्ज़ती और मौत से नजात दी है जो मैं अपने लिये पुख़्ता कर चुकी थी । मैं आपकी लौंडी हूं और आप मेरे मालिक हैं, आप जो चाहें सो करें मैं क़ब्र तक आपकी ताबेदार हूं" इतना कह कर उसने अपना सिर मेरी गोद में डाल दिया ।

मैंने कहा "तो अब कुल्लू को बुलाकर सब अहवाल उस्से कह दो उधर तमाम तयारी हो गई है" ।

कुल्लू आई, वह मेरा इरादा सुन कर निहायत खुश हुई और कहने लगी । "मीर साहब, मुझे इस बात का निहायत शक था कि आप इस तरह अपने तईं पाबन्द करेंगे या नहीं, मुझे रात दिन इसी बात का ख्याल बना रहता था, मगर अब मेरी तबीयत बेफ़िक्र हुई और मैं निहायत खुशी और खुर्रमी के साथ इस जवाहिर का हाथ आप के हाथ में दूंगी, खुदा आप पर बर्कत बख़्से और आप बेटे और पोतों को मुराद देखें । निहायत उमदा होता कि मैं भी आप के साथ चलती मगर मेरी ज़ईफी के सबब मेरी तनदुरुस्ती अजनबी मुल्क में दुरुस्त न रहेगी, आप की सख़ावत और इस लड़की की तकलीफ़रिहाई से मैं निहायत आसूदा हूं और जब मेरा वक़्त आवेगा मैं आराम से क़ब्र में जाऊंगी" ।

मैंने कहा "तो जल्दी करो; यहां एक पर्दा डाल लो और मैं मुल्ला को बुला लाताहूं, तुम तीनों इसके पीछे बैठ जाओ और बाहर शरह पढ़ा जाता है" ।

एक कपड़ा खेमें के इस पार से उस पार तक खींच दोनों तरफ़ लकड़ी गाड़ कर बांध दिया गया । मेरे वालिद, मैं और वह मुल्ला एक तरफ बैठे और औरतों की निश्नस्त पर्दें के दूसरी तरफ़ हुई ।

वालिद ने कहा "मुल्ला जी आगाज़ कीजिये सब दुरुस्त है" ।

उसने अपनी किताब खोली और अरबी की मामूली आयतें पढ़नीं शुरू की । मैं उनका एक लफ्ज़ भी न समझ सका और न वह खुद समझता था, मगर उसका पढ़ देनाही फ़कत काफ़ी था—रसूमात सब खतम हुये और अज़ीमां हमेशा के लिये मेरी होगई ।

साहब अगर मैं बीडर के शहर और किले को जिनकी मैंने इस कदर तारीफ़ सुनी थी बगैर देखे वहां से रवाना होगया होता तो मुझे सख्त रंज और अफसोस रहता इसलिये अनकरीब शाम को मैं अपने वालिद के साथ चन्द शखसों को लेकर शहर देखने के लिये निकला । अौव्वल तो हमलोग पुराने मदर्से के पास से गुज़रे जो बिलकुल बर्बाद होगया था, आगे के हिस्से में तमाम नीचे से ऊपर तक निहायत उमदा और बारीक मीने का काम किया हुआ था और उस मीनार में भी जिसे हम लोगों ने दूर से देखा था ऐसाही काम था । दूसरे मीनार का ऊपरी गोल हिस्सा टूट कर चारो तरफ़ छिटका पड़ा था; इन सब चीज़ों के देखने से मैं गुमान कर सकता था कि बर्बादी के पेश्तर यह इमारत कैसी आलीशान और रंगीन रही होगी । औरंगजेब की मेगज़ीन इसी इमारत में थी। बदबख़्ती से बारूद में आग लगने के सबब आगे का हिस्सा बिलकुल उड़ गया और एक मीनार गिरकर चूर चूर होगया था गोया लर्ज़ेये ज़मीन से तमाम बर्बाद होगया हो ।

आगे बढ़कर हमलोग टूटे हुये पुराने किले के साम्हने के मैदान में पहुंचे । ढेर के ढेर बेशुमार गिरे हुये महल जो अकसर दीवार ही पर बने थे नज़र आते और अनकरीब सभी झुके हुये दिखलाई पड़ते थे। उनकी कारीगरी और खर्च को देखकर उनके बनानेवालों की अकलमंदी और दस्तकारी की तरक्की ज़ाहिर होती थी और मगरूरों को यह नसीहत थी कि जब ऐसे ऐसे लोग इस दुनियां से उठ गये तो एक रोज़ उन्हें भी खाक में मिल जाना होगा । ये

आलीशान इमारतें सैकड़ों बरस से खड़ी थीं मगर अब उन्हीं महलों में जहां किसी ज़माने में बादशाह बेगमातें और दिलेर सिपाह रहते थे उल्लू चमगीदड़ और जंगली कबूतरों का डेरा पड़ा था।

मैंने अपने दिल में कहा, अफ़सोस! कहां हैं वे बादशाह और शहज़ादे? कहां है उनकी वह शाही रौनक? और कहां हैं वे बहादुर सिपाह जिन्होंने पुराने ज़माने में इन बुलन्द किले और महलों का इन्तिज़ाम कर बारहा दुश्मनों के दांत खट्टे किये हैं? अफ़सोस, सद अफ़सोस कि वे सब ख़ाक में मिल गये और ये शाही महल तमाम बर्बाद और उजाड़ हो गये, पस जैसी उनकी बर्बादी थी वैसाही सन्नाटा भी छाया था। फ़कत दीवारों की बर्बादी और तबाही की वीरानी न थी, नहीं बल्कि वे निहायत मज़बूती से खड़े थे, कहीं २ दीवार के सूराख में से तोप के मुहड़े नज़र आने से ज़ाहिर होता था कि अब भी यह मुकाम दुश्मनों के मुकाबिल ठहर सकता है मगर अफ़सोस कि मुहाफ़ज़तवालों में से अब कोई भी न था। हम लोगों ने ख्याल किया कि यहां कोई भी इनसान न होगा और फाटक की तरफ़ बढ़े। फाटक निहायत भारी और मीनागरी के काम से लदा था जैसा कि हम लोग पुराने मदर्से और गोलकण्डे के मकबरों में देख चुके थे।

हम लोग खड़े हैरत के साथ किले के फाटक को देख रहे थे कि एक सिपाही ने आकर पूछा कि आप लोग क्या चाहते हैं?

खालिद ने कहा "हम लोग मुसाफ़िर हैं और आज के लिये शहर में टिके हैं, हम लोगों की ख्वाहिश है कि जिस किले के बारे में हमलोगों ने इस कद्र धूम सुनी है उसे तो एक मर्तब: यहां आने पर ज़रूर देख लेना चाहिये। हम लोगों को अन्दर जाने की इजाज़त मिल सकती है?"

उसने कहा "बेशक आप जैसे अशराफों के लिये कोई रोक टोक नहीं है बल्कि हम लोग बखुशी तमाम चीजें जो अन्दर से के देखने लायक हैं दिखला देंगे, आप लोग मेरे साथ २ चले आइये"।

हमलोग उसके साथ चले और दो फाटक के आगे बढ़कर जहां से दुश्मन का गुज़रना निहायत मुश्किल और दुश्वार था तीसरे फाटक पर पहुंचे। यहां

हमारे उस रहनुमा ने कहा—"इसके ऊपर के कमरे काबिल देखने के हैं अगर आप चलें तो मैं दिखलाऊं"।

मैंने कहा "बेशक हम लोग इसी लिये आये हैं और वखुशी तमाम चीजें देखेंगे"।

वह सिपाही हम लोगों को एक तंग सीढ़ी से ऊपर ले गया जहां छोटे २ बहुतेरे कमरे मीनेकारी के काम के नज़र पड़े। इनके रंग की रौनक और दस्तकारीकी बारीकी देख कर अक़्ल हैरान थी। यहां का काम बाहर की कारीगरी से कहीं उमदा और नफ़ीस था। कुरान शरीफ़ की आयतें सुफ़ेद चमकते हुए हर्फ़ों में कार्निस के चारो तरफ़ आस्मानी ज़मीन पर लिखी थीं ऊपर के छत्त और दीवारों में हर तरह की फूल पत्तियां इस खूबसूरती और बारीकी के साथ बनी थीं कि उनके रंग और चमक पर ज़रा भी ज़वाल न था गोया अभी कलही बनकर तयार हुई हैं।

मैंने वालिद से कहा "ये चीजें लाज़वाल हैं अगर ये इमारतें भी ऐसीही रहतीं तो आइन्द ज़माने के लोग देखते कि इन के बनानेवालों की कैसी दौलत और हशमत थी।

उन्होंने कहा "इससे बढ़कर दूसरा सुबूत इस ज़माने के तनअज़ुली और पस्तहिम्मती का हो नहीं सकता। उस ज़माने के पादशाह नेक सखी और बहादुर होते थे, उनके रियासत की दौलत शहर की रौनक सुधारने और आलीशान इमारतों के बनाने मे सर्फ़ होती थी ताकि उनका नाम हमेशा के लिये कायम रहे। अब उन्हीं रियासतों की आमदनी या तो बेफ़ायदा जमा की जाती या फ़ज़ूलखर्चों में उड़ाई जाती है, अब कोई मकानात याद-दाश्त के नहीं बनाये जाते, दिलेर बादशाहों के रूबरू जंगी फ़ौज देखने में नहीं आती कि वे भी अपने मालिक की बहादुरी देख कर तलवार के ज़ोर से उसके नाम की तरक्की करें। अब शहनशाह शाहजहां और आलमगीर के खानदान के लोग पेनशन पाते और दक्खिन के बहादुर सूबे बिचारे टुकड़ों पर औकात बसर करते हैं।

हमारे उस रहनुमा सिपाह ने कहा "सच है जब खाने को रोटी भी सु-

यस्सर नहीं तो सिपाह कहलाने से क्या फायदा ? हम चंद लोग जो बचे हैं इन वीरान इमारतों और टूटे महलों के इर्दगिर्द घूमा करते हैं, हमारे दुश्मन फ़कत चीते और तेंदुये हैं जो रोज़बरोज़ बसबब फैयाज़ी जंगल के बढ़ते जाते और हमारे निकालने की कोशिश में लगे रहते हैं। इधर जनाब, ज़रा इस खिड़की में से देखिये—इस खुले मैदान का नाम जहां से आप होते हुये आये हैं फ़तह-मैदान है ! यहां बोडर के बादशाहों कि निशस्त होती थी और उनके साम्हने उनकी बहादुर फौज फाटक से आकर सैकड़ों तरह के हथियार की कसरत अपने मालिक को दिखला कर खुश करती थी"—फिर दूसरे खिड़की में लेजाकर बोला—"यह देखिये साम्हने उनकी कब्र है, वहां उनका जिस्मानी वजूद दफ़्न है मगर उनकी रूह बिहिश्त में अल्लाताला के दर्गाह में रौनक पाती है"।

हम लोग इसकी कैफ़ियत देखने लगे और दरहकीकत ऐसा मुकाम फिर देखने में न आया। हम सब ज़मीन से इस बुलन्दी पर थे कि गोया एक छोटी पहाड़ी पर खड़े हैं। उस मुकाम पर जहां ज़मीन गोया आस्मान से मिली थी तमाम नीला दिखलाई पड़ता था और नजदीक के खेत और गांव वगैरह साफ़ नज़र आते थे गोया किसी नक्शे पर खिंचे हों। इनके दर्मियान कबरों की इमारत और उनके सुफेद गुम्बज गुरूबे-आफ़ताब की लाल रोशनी में चमकते हुये निहायत खूबसूरत जान पड़ते थे।

मैंने कहा "जब वे लोग अपने फौजी सिपाह और मुल्क को देखते होंगे तो अपने तईं लासानी बादशाह ख्याल करते होंगे"

मैं फ़तहमैदान की तमाम कैफ़ीयत ख्याल कर रहा था और उस मैदान में सिपाहियों का कसरत करना, हथियारों की वर्दिश दिखलाना, दर्बारियों, और मुसाहिबों के तारीफ़ का गूंजना और भीड़ का जमा होना सब सिलसिले वार मेरे ख्याल में आ रहा था कि वालिद ने कहा "चलो देर होती है हम लोगों को जल्द वापस आना है"।

वहां से हम फिर उसी रहनुमा के साथ चले और एक खन्दक के ऊपर ऊंची सड़क पर पहुंचे—इस पुल पर खड़े होने से खन्दक की चौड़ाई और

गहराई निहायत उमदे तौर से नज़र आती थी। खन्दक के तह में सड़ा हुआ पानी बहुत जमा था जो बरसात गुजश्तः होने पर निहायत गंदा हो गया था। यह खन्दक निहायत अक्लमन्दी के साथ पहाड़ी चट्टानों में चारों तरफ़ किले के मुहाफ़जत के लिये खोदा गया था, तेहरी दीवार खड़ी थी और हर एक के बीच बहुत ज्यादा फ़ासला रक्खा था जिस्से एक मर्तबे निहायत मजबूत दुश्मन भी हमला करने से कामयाब न हो।

अब हमलोग किलेके अन्दर एक निहायत धुंधले मेहराब के रास्ते से जहां बहुतेरे सिपाहियों के रहने की जगह थी, वारिद हुये। वहां से निकल चन्द मकानातों को देखते एक फ़राख़ मैदान में पहुंचे जहां की तबाही और बर्बादी बाहर से भी बढ़कर देखने में आई—महल, अस्तबल, दफ़्तरखाना हम्माम, मेगज़ीन तमाम एक रंग तबाह हो गये थे जिनके देखने से एक तरह का स· दमा दिलपर पहुंचता था क्योंकि उनकी बर्बादी मरम्मत के बाहर थी और जो बचे थे अनकरीब गिरने के हो रहे थे।

यहां से रवाना होकर हम लोगों ने वह चीज़ देखी जो दरहकीकत निहायत अजीब थी याने एक बुर्ज के ऊपर एक बहुत भारी तोप नज़र आई जिसकी बहिन हमारे रहनुमा ने बयान किया कि बीजापूर में है। इस बुर्ज पर से नीचे के तमाम मैदान की कैफ़ीयत नज़र आती थी। सूरज डूबने का वक़्त होगया और किले की चौड़ी परछाहीं मैदान में पड़ती थी; दूर के मुका-मात बसबब शाम की तारीकी के कम नज़र आने लगे। शहर के गाय भैंस जो मैदान में चरने आये थे ऊपर चढ़ाई पर चढ़ने लगे, उस सन्नाटे में कभी२ उनके भोकरने की आवाज़ और घंटियों की टनटनाहट जो हर एक के गले में बँधी थी सुन पड़ती और ग्वाले के बांसुरी की मीठी २ सुरीली आवाज दूर से कान में आती थी।

हम लोग यहां ज्यादा न ठहर सके, जिस रास्ते से गये उधरही से वापस आये, गोकि मेरी ख़ाहिश ठहर कर उन बर्बाद मकानातों के कोठड़ियों के भी देखने की थी मगर बसबब बहुत देर होजाने के लाचारी थी इस लिये हम लोग उस रहनुमा को उसकी मेहनत और इख़्लाक के लिये कुछ इनाम देकर अपनी खेमे की तरफ़ रवाना हुये।

साहब, बीडर से लेकर हमारे इलिचपूर पहुंचने तक कोई वारदात काबिल बयान नहीं है, यहां से हम लोगों ने अपना कदम मकान की तरफ़ फेरा। मंगरूल और अमरावती से वापस न आकर हम लोग दूसरे रास्ते से लौटे। इन दोनों शहरों से हमारा वापस आना वाजिब न होता क्योंकि साहूकार का गुम होना अब तक अमरावती वालों के दिल में तरोताज़ा था और हमारा पहुंचना हर्गिज़ शुबहे से खाली न होता। पस हम लोगों ने नन्देर से जो गोदावरी पर वाक़ा है बरहानपूर का रास्ता लिया और जब बेरार की तराई में अकोला नामक शहर को पहुंचे तो वहां से इलिचपूर की तरफ़ रवाना होकर बमुहाफ़ज़त उस शहर में पहुंचे। आप यह हर्गिज़ न ख्याल करियेगा कि हम लोग इस लम्बी सफ़र में बिलकुल सुस्त और बेकार थे, नहीं नहीं हम लोगों का मामूली कारो बराबर उसी जोश और कामयाबी के साथ होता जाता था कि जैसे हमने इसे आगाज़ किया था; कोई भी मुसाफ़िर चाहे कैसाही गरीब क्यों न हो, जो हमारे हमराह हो जाता या जिसे हम बहका कर ले आते, हमारे हाथ से न बचने पाता था। गोकि इस तरह की कार्रवाई से कोई गहिरा माल हमारे हाथ न लगा ताहम् वह राह खर्च के लिये काफ़ी था और हम लोगों को अपने पास से एक पैसा भी सर्फ़ न करना पड़ता था।

इलिचपूर में हम लोगों ने रहीमनशाह दूला की दर्गाह के पास चंद आलीशान इमली के दरख़्तों के तले डेरा खड़ा किया। यह निहायत खुशनुमा मुकाम था। दर्गाह के नीचे एक छोटा सा दर्या जो पासही के पहाड़ी से निकला था, बहता था और इसके किनारे के ऊपरही वली साहब की दर्गाह दरख़्तों की बारियों में बनी थी जहां हर तरह का मजहबी आराम और राहत नज़र आता था। वहां पहुंचने और कुछ आराम करने के बाद मैं अपने ख़ाकआलूदा कपड़े वगैरह बदल चंद साथियों और अज़ीमा को हमराह ले दर्गाह में नज़र गुज़रानने गया कि वहां जाकर अल्लाताला का शुकरिया इस लिये अदा किया जावे कि उसने तमाम सफ़र में हमारी हिफ़ाज़त और खबर्दारी की।

बाद इसके मैंने अजीमां को खेमें में भेज दिया और मुल्लाओं से इधर उधर की मामुली गप्प सप्प करने लगा ताकि कोई नया शिकार हाथ लगे क्योंकि इलिचपुर जैसे बड़े शहर से मुझे बहुत कुछ माल हाथ लगने की उम्मेद थी।

थोड़ी देर तक हम लोग इधर उधर की बातें करते रहे आखिरकार मुल्लाओं में से एक शख्स ने मुझ से पूछा कि आप कौन हैं कहां से आते हैं और कहां तशरीफ़ ले जांयगे ?। मैंने कहा मैं घोड़े का सौदागर हूं और हिन्दोस्तान से घोड़े लेकर हैदराबाद को गया था; अब उन्हें फरोख्त करके वापस आता हूं"।

उसने पूछा "और ये लोग जो आपके हमराह हैं कौन हैं ?"

मैंने कहा "एक तो मेरे वालिद हैं जो खुद सौदागर हैं, बहुतेरे इनमें से सहीस और नौकर हैं जो हमारे घोड़ों के हमराह गये थे और कितने ही इनमें से मुसाफिर हैं जो आते वख्त रास्ते में हमारे साथ होगये हैं"।

मुल्ला ने कहा "तो आप के साथ खासा एक काफ़िला है ?"।

मैंने कहा" बेशक, और चूंकि हम लोगों का गरोह ज्यादा और मजबूत है हमारा इरादा है कि बैतूल से होते हुये जब्बलपूर को जावें, गोकि यह रास्ता छोटे मोटे गरोहों को खतरनाक है मगर हमारे जैसे बड़े गरोह को कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

उसने जवाब दिया "बेशक इस रास्ते से आपको जाने में बहुत फेर बच जायगा जो आपको नागपुर के रास्ते से पड़ता और चूंकि आप जंगल के राह से जातेही हैं मगर चन्द मुसाफिर और भी आप के हमराह हो जांय तो शायद आपको कुछ भी उज्र न होगा, मेरे एक करम फर्मा भी उधर से जाया चाहते हैं।

मैंने कहा "हर्गिज़ नहीं, बशर्ते कि वे मुसाफ़िर अशराफ़ और इज्जतदार हों।

उसने कहा "वे शख्स जिनकी ज़िक्र मैं आप से करता हूं निहायत इज्जतदार हैं और दर्जे में नव्वाब से किसी तरह कम नहीं, वे अपने भतीजे के पास जो भोपाल में नव्वाब हैं, मुलाकात के लिये जाते हैं।

मैंने कहा "ओह ! मैं उनके बारे में सुन चुका हूं, शायद आप नव्वाब अलीखां का ज़िक्र करते हैं"।

उसने कहा "जी हां, बजा फर्माते हैं वे निहायत सिपाहमर्द हैं। अफ़-सोस है कि उन्हें सब्ज़ी या भंग का बहुत ज्यादा शौक है और इसी बाइस उन के नाम का खौफ़ दुश्मनों पर इस क़द्र गालिब है कि वे लोग सुनतेही खौफ़ में आ जाते हैं"।

मैंने कहा "आप ठीक कहते हैं, खां साहब की बहादुरी की शोहरत हमारे मुल्के हिन्दोस्तान में अकसर उनकी ज़ुबानी सुनने में आती है जो इधर से उसतरफ़ को जाते हैं। मैं उन्हें अपने साथ ले जाने में निहायत खुश हूं क्योंकि सुनता हूं कि वे भी एक लासानी शख्स हैं"।

मुल्ला ने कहा "आपका सुनना भी बजा है नव्वाब साहब अकसर शाम के वक़्त यहां आकर भांग वगैरह छानते और हम लोगों से गुफ़्तार किया करते हैं, आज शाम को जब वे तशरीफ़ लावेंगे मैं आपको इत्तला करा दूंगा, अगर उस वक़्त आप ज़रा खेमे से यहां तकलीफ़ फर्मावें तो मैं आपकी मुलाकात उनसे करा दूंगा"।

मैंने कहा "यह आपकी इनायत है मुल्ला साहब! आप उस वक़्त मुझे बुलवा भेजियेगा और मैं फ़ौरन् आपके हुक्म पर बखुशी हाज़िर होऊँगा"।

थोड़ी देर बाद मैं उससे रवाना हुआ। यह एक ऐसे बनिज की उम्मेद हुई जो तमाम पेश्तर के शिकारों से बढ़कर होने वाला था; उसका नवाब का दर्जा, और बहुतेरे आदमियों का उसके हमराह होना और उसके गायब होने पर मुल्क में शोर का मचना वगैरह ऐसी बातें थीं कि जो मेरे जैसे ठग को जिसकी खास गर्ज़ नामवरी और दौलत पैदा करने की थो जोश दिलाने के लिये काफ़ी थीं"।

मैंने अपनी उम्मेद का एक लफ्ज़ भी किसी दूसरे से न कहा। मैंने यह इ-रादासुसम्म कर लिया था कि इसकी तरकीब और इसका अंजाम देना मैं कुल अपने हाथ में रक्खूंगा, अगर मैं कामयाब हुआ तो मेरा नाम हमेशा के लिये पुख़्ता होजायगा और जब कि मेरे साथ इतने मददगार हैं तो मैं कभी नाकाम याब नहीं हो सकता। उसी दम मुझे यह ख्याल हुआ कि चूंकि नवाब मर्द-सिपाह है वह नाक तक हथियारों से कसा होगा, मैं उसका मुकाबला क्योंकर

कर सकूंगा—मगर फिर मैंने सोचा कि मेरा यह ख्याल महज़ फ़जूल है। मैं अपनी ताकत और ठगों की वर्दिश पर ज्यादा एतकाद रखता था, मासिवाय इसके मैं पैदल और घोड़े की पीठ पर भी निहायत उमदा तलवार का हाथ रखता था इसलिये चाहे कोई हो इनसान की शकल होने से मैं हर्गिज़ खौफ़ न खाता था।

मैंने कहा, अमीरअली! तुम और तुमारे तमाम कौम के अकसर लोग अङ्गरेजों से तो हमेशा खौफ़ खाते रहे हो। तुम लोगों ने आज तक कभी किसी अङ्गरेज़पर हमला न किया, शायद तुम्हारी हिम्मत न पड़ती होगी।

अमीर अली यह सुनकर खूब हँसा और बोला "नहीं साहब, आपका फ़र्माना गलत है, हमलोगों ने कभी आपसे खौफ़ नहीं खाया, मगर मुशकिल यह है कि आपपर हमला होना गैरमुमकिन है। जब आप घोड़े की पीठ पर सफ़र करते हैं उस वक़ आप पर हमला करना लाहासिल है क्योंकि आप लोगों के पास एक पैसा भी नहीं निकलता। खेमें में आपके पास बीसियों नौकर रहते हैं और रात को हमेशा सख़ पहरा रहता है। हां आपकी डांक सवारी में मुमकिन है कि हमलोग आपकी पालकी मे से चन्द रुपये पा जावें, मगर उस वक़ भी आपलोग अकसर हथियारबन्द रहते और पिस्तौल साथ रखते हैं, और खतरा इस बात का रहता है कि कार अंजाम के पेशतर शायद हमारे दो एक शख्स मारे जांय। सबसे बढ़कर बात यह है कि अगर आप लोगों में से एक का भी पता न लगे तो इस कदर शोर व तहकीकात मुल्क में मचता है कि हम लोगों की जान बचाना मुशकिल पड़ता है और आप लोगों से दस्त-याब शुदामाल के उसके फरोख़ करने पर गिरफ़ार हो जाने का बहुत ज्यादा खतरा रहता है।

मैंने हँसकर जवाब दिया "तुम्हारा यह कहना बहुत दुरुस्त है, मगर मैं ख्याल करता हूं कि शायद तुम लोग पिस्तौल से ज्यादा खौफ़ खाते हो—पर खैर तुम अपना अहवाल बयान करो मैंने नाहक तुम्हें बीच में रोक दिया"।

उसने "कहा, खैर साहब, मैं निहायत बेकरारी के साथ शाम तक नवाब की इन्तिज़ारी खींचता रहा। मैं अपने खेमे के दर्वाज़े पर बैठा था देखता क्या हूं

कि एक शख्स घोड़े पर सवार चन्द नौकरों को साथ लिये शहर की तरफ़ से आ रहा है। मुझे यह देखकर और भी ताज्जुब हुआ कि उसके साथ एक निहायत खूबसूरत नौजवान लड़की एक चुस्त घोड़े पर सवार है। वह हमारे खेमें के पास से होता हुआ दर्या के पार हो दर्गाह में वारिद हुआ। मैंने कहा क्या यही मेरा बनिज है? योंही बैठा ख्याल कर रहा था कि मुल्ला का एक शख्स मुझे बुलाने के लिये आया और मैं भी अपनी ढाल और तलवार उठा उसके साथ रवाना हुआ।

तेईसवां पर्व।

नवाब सलीखां बहादुर उस मुल्ला के पास बैठा हुआ जिस्का बयान मैं पहिले कर चुका हूं अपने भँागका कटोरा छान रहा था। इर्द गिर्द उसके चंद मुसाहब खड़े थे जिन्में से दो एक के चेहरे पर तलवार के निशानात देखने से मालूम होता था कि इन्होंने जंग के मैदान में अपने मालिक के साथ निहायत बहादुरी दिखलाई है। इनके पीछे वह खूबसूरत नाजनीन लौंडी जिस्का बयान मैं पेश्तर कर चुका हूं बैठी दूसरा ताज़ा प्याला नव्वाब साहब के लिये तैयार करने का सामान कर रही थी। मुल्लाने मुझे पेश करके कहा "हुजूर यही वह नौजवान शख्स है जिस्का ज़िक्र ताबेदार ने हुजूर से किया था। इस्के तारीफ़ करने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि हुजूर खुद देखते हैं कि यह शख्स इज्ज़तदार और नेकखान्दान है और हुजूर जैसे आली दर्जे के रईस के हमराह के काबिल है"।

मैंने अपनी तलवार के मुठ्ठे से नजर गुज़ारी और उन्होंने उसे छूकर हुकुम दिया कि गलीचे पर बैठ जाओ।

इस वक़्त मैंने शाइस्तगी और तकल्लुफ़ का दिखलाना निहायत वाजिब समझा, पस मैंने निहायत आजज़ी से अर्ज़ की कि बन्दा इस काबिल हर्गिज़ नहीं कि हुजूर के रूबरू इस गलीचे पर बैठे, मेरे लिये ज़मीन की इज्ज़त बहुत है, इतना कहकर मैं अपनी तलवार और ढाल को गलीचे पर आगे रख दोज़ानू हो फ़र्श

के किनारे पर बैठ गया, ज्योंही मेरी तलवार पर उनकी निगाह पड़ी उन्होंने कहा "मीरसाहब यह हथियार तो निहायत उमदा है क्या मैं इसे देखसक्ताहूं?"

मैंने फौरन् तलवार का मुट्ठा उनके आगे करके अर्ज़ की "यह हुज़ूर की नज़र है"

उन्होंने कहा "नहीं नहीं मीरसाहब, मैं इसे लेने की ख़ाहिश नहीं करता, मगर मुझे ऐसे चीज़ों के देखनेका निहायत शौक़ रहता है और मैंने इसी क़िस्मकी चंद नायाब चीज़ें जमा की हैं जो कभी मौक़ा पाकर मैं आपको दिखलाउँगा"।

उन्होंने उसे, निहायत होशियारी के साथ म्यान के बाहर खींचा और जब उसका साफ़ पालिश किया हुआ फल सूरज की रोशनी में चमका तो वे उसे देख कर निहायत खुश हुये और यों मुस्काराये गोया किसी पुराने दिली दोस्त से बहुत अर्से के बाद मुलाक़ात हुई हो।

साहब, अब मैं नव्वाबसाहब की शबाहत बयान करता हूं। यह शख़्स बदन का लम्बा और निहायत मज़बूत था ख़ासकर उसके दोनों बाज़ू महीन मलमल के कुरते के नीचे से झलकते और निहायत गठीले जान पड़ते थे। बदन से वह कुछ मोटा था, शायद यह उम्र का असर हो; उसके दाढ़ी और मोंछ के घुंघराले बालों में से बहुतेरे बाल पक गये थे, मैं ख़्याल करता हूं कि शायद बहुत ज़्यादा भाँग पीने से यह असर पैदा हुआ हो। चेहरा उसका निहायत ख़ूबसूरत और आली ख़ानदान का ज़ाहिर करनेवाला था। उसकी चौड़ी पेशानी की नसें कुछ उभड़ी हुई और खून से भरी थीं। आंखें उसकी बहुत चमकीली और निहायत तेज़ थीं मगर बसबब नशे के कुछ फूली और लाल होरही थीं इसलिये उन्हें ख़ूबसूरत नहीं कह सकता। नाक उसकी पतली और लम्बी और नथनों के सूराख़ बड़े थे उसका मुंह छ टा मानिन्द कमान के झुकाव पर था और लम्बे २ दाढ़ी और मोछों के बाल से छिपा हुआ यों मालूम पड़ता था गोया वह किसी पर हिक़ारत की निगाह से देख रहा हो। उसके चेहरे से रियासत झलकती थी; चाहे उसे कैसोही गरीबी पोशाक पहिना दी जाय मगर उसे देखने ही से हर एक बशर कह सकता था कि यह कोई बहादुर सिपाह और आलीख़ानदान का शख़्स है।

गले में उसके सिवाय बड़ी २ मोतियों के एक माला के और कोई ज़ेवर न था। लिबास उसका निहायत सादा और बहुत सफ्फाफ था । मैंने देखा कि उसके बदन पर दो दाग़ बर्छी के लगे हैं, एक आगे की तरफ़ गर्दन, और दूसरा चौड़े सीने पर महीन कपड़े के अन्दर से नज़र आता था । साहब, सब्ज़ीखां इस तरह का बहादुर शख्स था कि उसने कई एक लड़ाइयों में दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये थे और उसी शख्स को मैंने अव्वल मौका पाने पर अपना शिकार बनाने का इरादा किया ।

वह तलवार को इतनी देर तक बग़ौर देखता था कि मुझे यह ख्याल हुआ कि शायद यह तलवार किसी उस शख्स की है जो मेरे वालिद के रूमाल तले पड़ चुका है और जिस्से नव्वाब साहब से किसी किस्म की शिनासाई हो । मैं दिल में गौर कर रहा था कि अगर यह मुझसे पूछेगा कि तुमने यह तलवार कहां से पाई तो मैं क्या जवाब दूंगा कि इतने में उसने अपनी उँगली आहिस्ते से उसके धार पर फेर कर कहा "दोस्तमन् मालूम होता है कि आप भी जंग के मैदान देख चुके हैं इस उम्दी तलवार में बाज़ जगह काट के निशानात पड़ते हैं जो पुराने सिपाह के निगाह से हर्गिज़ नहीं चूक सकते । कहिये ये निशानात इस्में क्योंकर आये ?"

मैंने कहा "जी हां हिन्दोस्तान से आते वक्त रास्ते में चन्द डाकुओं से मुकाबला होगया था" और मैंने उसे उन डांकुओं का अहवाल जो निर्मूल के रास्ते में मिले थे सुना दिया।

उसने कहा "खूब हुआ मगर मैं ख्याल करता हूं कि अगर आप उस कामयाबी के बाद उन डाकुओं के पीछे चले गये होते तो दो चार बदमाश और भी कटते, अगर आप का दिल पीछे न हटता तो मैं उम्मेद करता हूं कि यह तलवार हर्गिज़ खाली न जाती" ।

मैंने जवाब दिया "नव्वाब साहब, बन्दे का दिल आजतक ऐसे मुआमलों में हर्गिज़ पीछे नहीं हटा, मुझे जो लोग जानते हैं इस बात से खूब वाकिफ़ हैं कि बन्दा हमेशा ऐसे मौके की तलाश में रहता है कि मैं अपनी मर्दानगी दिखलाऊं, मगर उस वक्त मैं और क्या कर सकता था ? हमलोग

बहुत थोड़े थे जंगल निहायत घना था, रात के वक़्त उनका पीछा करना गैर-मुम्किन् था" ।

उसने कहा "आप ठीक कहते हैं, मगर अब आप सब्ज़ीखां के हमराह किस्मतआज़माई कीजिये—इस वक़्त तो मेरे पास कुछ नहीं है कि मैं आपको दूं, लेकिन इनशाअल्लाह वह वक़्त जल्द आया चाहता है कि बहादुर लोग कुछ न कुछ नाम पैदा कर सकें। मेरे यार दोस्तमहम्मद ने मुझे जल्द बुलाया है और लिखा है कि उन्हें नई चढ़ाई के लिये दिलेर सर्दारों की ज़रूरत है और मैं ख्याल करता हूं कि आपकी शकल और बहादुरी देखकर वे निहायत खुश होंगे। आपकी क्या राय है? आप इस काबिल हर्गिज़ नहीं हैं कि तमाम उम्र घोड़ेही फरोख़ किया करें और अगर आपने इस सौदागरी में कुछ रुपया जमा कर लिया हो तो बेहतर है कि आप उस्से चन्द दिलेर लोगों को जमा-कर हुजूर की खिदमत में हाजिर हों। दोस्तमहम्मद को आप जैसे नौजवानों की ज़रूरत है और इनशाअल्ला हमलोग नाम पैदा करने के लिये ज़रूर कोशिश करेंगे।

मैंने कहा "बन्देनेवाज़ की ऐन निवाज़िश है, मेरी तबीयत हमेशा इसी तरफ़ रग़बत करती है। जब आपकी इतनी इनायत है तो मुझे ज़रूर नौकरी मिलेगी, और जब एक मर्तबः कोई काम मेरे सुपुर्द होगा तो मैं दिखलाऊंगा कि मैं हर्गिज़ पीछे रहनेवाला नहीं हूं"।

उन्होंने कहा "मैं इस्से निहायत खुश हूं कि आप मेरे साथ चलियेगा, मैं देखता हूं कि आपके साथ चन्द लोग हई हैं और चन्द मुसाफ़िर भी हैं। सीधे जबलपुर के सड़क से चलने की आपकी क्या राय है? । गोकि यह रास्ता खराब है मगर मुझे वक़्त बहुत कम है, नागपुर का रास्ता गोकि डाकुओं के खौफ़ से खाली है मगर उसमें बहुत फेर पड़ता है"।

मैंने कहा "ग़रीबपर्वर आप से मुलाकात होने के पेश्तर ही मैंने उस रास्ते से जाने का इरादा किया था क्योंकि हमारा गरोह ज्यादा, हथियारबन्द, और मज़बूत है, मगर अब आप के साथ होने से मुझे किसी किस्म का दग़-दग़ा न रहा। चोर या डाकुओं से मुझे कुछ भी खौफ़ नहीं है और शायद हुजूर भी उनसे बेखतर हैं।

उसने कहा "बेशक, चूंकि आपका साथ है मुझे हर्गिज खौफ नहीं, वरना उन चन्द लोगों के हमराह जो मेरे साथ हैं मैं इकरार करता हूं कि मेरी हिम्मत जंगल से जाने की न पड़ती क्योंकि जो डाकूलोग उस तरफ़ घूमते हैं वे निहायत मज़बूत और बेरहम हैं और अगर सज्जीखां ऐसी २ लड़ाइयों के बाद किसी अजनबी जा पर उनके हाथ पड़ जाय तो निहायत अफ़सोस का मुकाम है।

मैंने दिल में कहा "नव्वाब साहब! जिस जंगल का आपको खौफ़है उसी जंगल में आपकी मौत उन्हीं लोगों के हाथ होगी, और जिस मुकाम पर सज्जीखां की क़ब्र होगी वहां कोई मकरबा बनानेवाला न होगा।"

उसने कहा "तो मीरसाहब आप कब तशरीफ़ ले चलियेगा? क्या किसी काम के सबब आप को यहां कुछ देर लगेगी?"

मैने कहा "जी नहीं मैंने तो कलही सुबह रवाना होने का इरादा कर लिया है अगर हुजूर चाहें तो मैं चन्द रोज़ ठहर सकता हूं"?

उन्होंने कहा "अफ़सोस, कल तो नहीं मगर परसों अलस्सुबह मैं आप से यहीं मुलाकात कर सकता हूं और तब हम लोग साथही रवाना होंगे"।

मैंने कहा "जो हुकुम,—मैं वक्त पर तयार रहूंगा अगर इजाज़त हो तो मैं अब तस्लीमात अर्ज़ करूं"।

उन्होंने कहा "बेशक, अब मैं आप को ज़ियादा तकलीफ नहीं दिया चाहता क्योंकि अब मैं भी रवाना होऊंगा। आज मेरे दोस्त सलाबत खां के यहां कुछ जल्सा है और मैं वहां पहुंचने का इकरार उनसे कर चुका हूं"?

मैं अपने खेमें को वापस आया और गोकि मेरी तबीयत निहायत रग़बत खाती थी कि मैं इस माजरे को वालिद से बयान करूं मगर मैंने इसे तब तक रोक रक्खा कि जब तक नव्वाब साहब आकर हम लोगों में शामिल न हो जावें, उस बख्त मैं वाजिब तौर से उनकी मुलाकात वालिद से कराऊंगा।"।

तीसरे दिन सुबह को हम लोग रवाना होने की तयारी कर रहे थे कि नव्वाब साहब ने मेरे खेमें के पास घोड़ा खड़ा कर मेरे बारे में दर्याफ़ किया।

मैं फ़ौरन् बाहर निकल आया और उनसे साहब सलामत हुई, इतने में

मेरे वालिद भी आगये और उनसे मैंने नव्वाब साहब की मुलाकात कराई। बादजां मामूली साहबसलामत और खैरीआफ़ियत के वालिद ने मेरी तरफ़ मतलब-आमेज निगाहों से देखा जिसे नव्वाब साहब ने कुछ भी न समझा मगर मैंने फौरन् उसका जवाब उसी तरह दिया और वालिद समझ गये। उनका चेहरा मारे खुशी के चमक उठा और मुझे भी निहायत राहत हासिल हुई क्योंकि मैं ही इस शिकार को गरोह के लिये फँसा लाया था।

कुछ देर बाद हमारा काफ़िला रवाना हुआ। ज्यों ज्यों दिन चढ़ता त्यों त्यों नव्वाब साहब का बदन और चेहरा ज्यादातर खिलता जाताथा। वे एक निहायत मज़बूत तुर्की घोड़े पर सवार थे जो अपने मालिक के रान तले सैकड़ों तरह की उम्दी २ चाल बदलता, उछलता कूदता कदम भरता चला जाता था। घोड़े पर गुलेनारी मखमल का चारजामा पड़ाथा जो गोकि कुछ मैला हो गयाथा तो भी बसबब ज़री के काम के खूबसूरती और रौनक़दारी मे लासानी था।

मगर मेरा सब से ज्यादा ख्याल उस सवार की तरफ़ था जो अपने मामूली पोशाक के ऊपर निहायत चमकीला बख्तर का कुरता पहिने हुये था, कमर में उसके बहुत बारीक कामका काश्मीरी दुशाला कसा था जिनमें से दो या तीन तिलाई और नुकरई मुठ्ठे की कटारें लटक रहीं थीं। उसके दोनों बाज़ू केहुनी तक फौलाद के बख्तर से महफूज़ थे और दोनों जांघ पर भी वैसीही हिफाज़त थी। सिर पर उसके फ़ौलाद की चमकती हुई टोपी जिसमें से गुलेनारी झब्बा लटकता था चढ़ी थी जिसपर एक काश्मीरी रूमाल सूरज की गर्मी के हिफ़ाजत के लिये लपेटा था। पीठ पर उसके गिलट की हुई रंगीन गेंड़े की ढाल एक तरफ चढ़ी थी और दूसरी तरफ एक लम्बी तलवार मखमल के कामदार पड़तले में से लटक रही थी। उसके जीन में एक लम्बा और चमकीला गँड़ासा निहायत मजबूती के साथ खोंसा हुआ था।

किस्सा कोताह यह कि सब्जी खां की शकल उसके सिपाहियाना शोहरत के मुआफिक थी। मैंने हैदराबाद में सैकड़ों सिपाह देखे थे मगर इस शख्स सा लासानी हथियारबन्द जवान मैंने हनोज़ न पाया था जिसके मुकाबिले

उन्होंने कहा "आप मुझे बड़े ग़ौर से देख रहे हैं"।—मैंनें कहा "जी हां, मैंने आजतक ऐसा पुख़्ता सवार न देखा था जो अपने घोड़े हथियार और तमाम सजावट से हरतरह दुरुस्त हो। क्या आप हमेशा यौंही सफ़र करते हैं?"

उन्होंने कहा "हमेशा मीरसाहब! आप जानते ही हैं कि सिपाह को कभी हथियार से अलग न रहना चाहिये। मैं ख्याल करता हूं कि उस ऐयाश सलाबतखां के साथ चन्दरोज़ रहने से मेरा बदन कुछ मुलायम हो गया है क्योंकि अब यह बख़्तर मुझे सख़्त जान पड़ता है। मगर वह वक़्त जल्द आवेगा कि जब मुझे इसकी दर्कार पड़ेगी, पस बेहतर है कि मैं अभी से इस के पहिनने का रस रक्खूं।'

हम लोग तमाम मंजिल साथही साथ चले गये और रास्ते भर नव्वाब साहब अपनी लड़ाइयों और चढ़ाईयों का ज़िक्र करते थे। मुझे जैसा इन बातों से ताज्जुब होता था वैसाही मैं उसकी की फ़साहत-ज़ुबानी का मोतक़िद था; मुझे अकसर यह ख़्वाहिश होती कि मैं उसे बतौर दोस्त के मुलाक़ात करता और अपना नाम उसके मातहत के सिपाहियों में लिखा कर उसके झण्डे के नीचे अपनी बहादुरी दिखलाता। मगर अफ़सोस उसकी किस्मत का फ़ैसला हो चुका और वह हमारे पाक मजहब और कायदों के मुताबिक हमारा "बनिज" कायम हो चुका था।

हमलोग पहिली मंजिल पर बगैर कोई वारदात हुये पहुंच गये। वहां गांववालों से मालूम हुआ कि इस्से आगे जंगल बहुत घना और रास्ता निहायत ख़राब और पथरीला है, सब से भारी आफ़त तो यह थी कि वहां के गोंड़ लोग बड़े सरकश और मज़बूत थे, और जो कोई मिलता उसे लूट लेते थे।

नव्वाब साहब ने गांववालों से यह सुन कर कहा "इनशाअल्ला! कुछ पर्वाह नहीं, आने तो दीजिये, देखा जायगा, अगर एकाद का सिर धड़ से अलग न करूं तो बात क्या?"

पस दूसरे दिन सुबह को हम लोग ज्यादा होशियारी से रवना हुये, मैंने अपने आदमियों से कह दिया कि सब साथही साथ रहें। सड़क निहायत ऊंची नीची और पथरीली थी इस लिये अज़ीमां की गाड़ी बहुत आहिस्ते २

चलती थी, मैं चन्द मोतबिर और जवाँमर्द सिपाहियों को गाड़ी के चारो तर्फ पहरे पर कर आप नव्वाब साहब के हमराह गरोह के आगे २ रवाना हुआ।

ज्यों ज्यों आगे बढ़ते जाते रास्ता घना और खराब ही मिलता जाता था, कई जगह इस क़द्र तंग था कि फ़क़त पगडंडी ही नज़र आती थी; बाज़ मुक़ामों पर मेरे आदमियों को उन शाखों के काटने की ज़रूरत पड़ जाती जो अक्सर सड़क पर बढ़ जाने के सबब गाड़ी का रास्ता रोकते थे। कहीं २ दो निहायत ऊँचे करारों के दर्म्यान से सड़क जाती थी जिसके ऊपर खड़े होकर दुश्मन चाहे जितनी वारें कर जावें मगर हमलोग अपनी हिफ़ाज़त में उनपर एक चोट भी न कर सकते थे।

इस तंग घाटी से आगे बढ़ कर खुले मैदान में पहुंचे जहां हनोज़ जंगल कुछ घनाही था मैंने कहा "नव्वाब साहब, वह जा निहायत ख़तरनाक थी अगर उस मुक़ाम पर किसी गरोह ने हमारे ऊपर हमला किया होता तो हमलोग बेशक मारे पड़ते"।

उन्होंने कहा "बेशक, शुक्र है अल्लाताला का कि हम लोग वहां से सही सलामत निकल आये, मुझे याद आता है कि वह मुक़ाम इसी लिये सख़ बद-नाम है। मगर इस्के आगे मैं ख्याल करता हूं कि ऐसा कोई ख़तरनाक मुक़ाम नहीं है, जंगल भी रफ़ २ कम होता गया है और ऐसी घनी झाड़ी आगे नहीं पाई जाती। हमलोग ये बातें करही रहे थे कि गोंड़ों का गरोह पीछे से आ टूटा।

सजीखां ने देखते ही ललकार कर आवाज़ दी जिस्से जंगल गूंज उठा "शमशेर आलम! शमशेर बदस्त"। इतना कह उन्होंने घोड़े को रोक म्यान से तलवार खींच ली और उसे एड़ लगा, दो एक कावा खिला, टोपी दबा, आसन कस मुझे आवाज़ दी कि "मीरसाहब होशियार हो जाइये"।

मैंने भी फ़ौरन् तलवार निकाल, तीरों से हिफ़ाज़त के लिये ढाल खोल आगे रख ली। घोड़े को एड़ देतेही वह दोही छलाङ्ग में नव्वाब के घोड़े के मुक़ाबिल पहुंचा और साथही बद्रीनाथ भी मय चन्द जवांमर्द सवार और पैदल सिपाहियों के बन्दूक लिये आकर मेरे पास खड़ा हो गया।

नव्वाब साहब ने एक कड़ी ललकार दी "आओ बदज़ाती—मर्द हो तो

मुकाबिल आकर दिलेर और जवांमर्दों के रूबरू बहादुरी की आजमाइश करो;—कमीने—काफ़िर—बुज़दिल—आओ मुकाबिल, सूअर के बच्चो”—

मुझे नव्वाब की गुसवर शकल और तलवार उठाकर गालियों का देना देख निहायत खुशी होती थी। वे सब साम्हाने पहाड़ी पर वहीं के वहीं बैठ गये और लगे तीर चलाने, जो हवा में सनसनाते हुये हमारे कान के पास से होकर निकल जाते थे। एक तीर नव्वाब साहब के घोड़े के गर्दन में आकर लगा जिस्से हलका सा ज़ख्म होगया और इधर गोंड़ों ने बड़े ललकार के साथ खुशी ज़ाहिर की।

सलीखां ने तीर खींच लिया और कहा “आह! मेरे मोती, तुझे ज़ख्म लगा गया, कुछ पर्वाह नहीं” फिर मेरी तरफ़ देखकर कहने लगे “मीरसाहब! ये बदज़ात हर्गिज़ नीचे बमुकाबिल न आवेंगे लगाइये यहीं से निशाना—मारकर इन्हें हम लोग भगा दें”।

मैंने अपने लोगों से ललकार कर कहा “देखना बहादुरी, गर्दन उठातेही निशाना भरपूर बैठे”।

इधर से भी बन्दूकें चलने लगीं। एक गोंड़ बेखबर पहाड़ी के कोने पर बैठा हुआ अपने लम्बे कमान की पेर में अड़ा तीर चला रहा था कि सर्फ़राज़ खां ने उस पर बन्दूक का निशाना छोड़ा—गोली के लगतेही वह लुड़कता हुआ हमारे कदमों के पास आ पड़ा, यह निशाना उसकी गर्दन पर भरपूर बैठा था जिसके लगतेही उसका दम हवा होगया। गोंड़ों ने उसे लुड़कता देख बड़ा गुल मचाया,—हम लोगों को ख्याल हुआ कि अब ये ज़ोश में आकर खूब लड़ेंगे मगर साथही एक दूसरा शख्स भी गोली की सख्त चोट खाकर गिरा और वे सब खौफ़ में आ उसे उठाकर फ़ौरन पहाड़ों में ले भागे। उनका पीछा करना बिलकुल लाहासिल और ग़ैरमुम्किन था इस लिये हम लोगों ने अपना सीधा रास्ता लिया।

उस रोज़ और किसी किस्म का हादिसा न हुआ और हम लोग ठीक वक़्त पर मञ्ज़िल मकसूद को पहुंच गये।

थोड़ीदेर बाद वालिद ने आकर मुझ से पूछा “अमीर अली! नव्वाब को

को बनिज बनाना है या नहीं? अगर तूने उसे बतौर मेहमान के हमराह लिया हो तो वैसा कह, वरना उसकी फ़िक्र जल्द करना चाहिये"?

मैंने कहा "मेहमान!—हर्गिज़ नहीं, उसे फ़ौरन दफ़ा करना चाहिये, ख़ास कर ऐसे मुकाम पर जहां उसके खतम करने के इतने मौके मौजूद हैं"।

वालिद ने कहा "यह गैरमुम्किन है, घोड़े की पुश्त पर उसे हाथ लगाना महज़ बेवकूफ़ी होगी। वह निहायत उम्दा सवार है और उसका घोड़ा भी जानदार है, अगर ज़रा भी गड़बड़ होगा तो वह उछलता हुआ निकल जायगा और तब उसे कौन गिरफ़्तार कर सकता है? उसके लिये कोई दूसरी तदबीर निकलना चाहिये"।

मैंने कहा "कुछ पर्वाह नहीं आप इस काम को मेरे सुपुर्द कीजिये अगर किसी ख़ास मुकाम के चुनने की कोई ज़रूरत न हो तो मैं अपना मौका तलाश कर लूंगा"।

चौबीसवां पर्व्व।

मैंने दूसरे दिन बद्रीनाथ और सर्फ़राज़ खां से कहा "दोस्तो, तुम लोग शायद पेश्तरही समझ गये होगे कि नव्वाब साहब हमारे साथ क्यों हैं"।

बद्रीनाथ ने जवाब दिया "भला इसमें भी कुछ पूछना है आप इतनी दूर से उन्हें साथ लाये हैं—मगर यह कहिये कि आपकी क्या ख़्वाहिश है और आप क्योंकर इस काम को अंजाम दिया चाहते हैं। रास्ते में घोड़े की पुश्त पर हमला करना बिलकुल फ़ज़ूल होगा, इसमें कोई शक नहीं कि वह ज़रूर एकाद शख़्स को काट डालेगा, और भई अभी मुझे कई काम करने बाकी हैं क्यों नाहक बैठे बैठाये अपनी जान खतरे में डालूं"।

मैंने कहा "तुम सही कहते हो जोखिम उठाने की कोई ज़रूरत नहीं ताहम्, मैं ख्याल करताहूं कि कोई न कोई मौका जल्द हाथ आही जायगा?

उन दोनों ने साथही पूछा "क्योंकर?"

मैंने कहा "सुनो, और बतलाओ कि मेरी राय तुम लोगों की दानिस्त में दुरुस्त है या गलत—कल की मंज़िल में नव्वाब साहब इस बातकी शिका-

यत करते थे कि रास्ते में कहीं साफ़ पानी का चश्मा न मिला ताकि वे अपना मामूली शर्बत बनाते—तुम जानतेही हो कि वह लौंडी जो उनके साथ है हमेशा उनके लिये भांग तयार करती है। पस मुझे उम्मेद है कि कलकी मज़िल में ज़रूर कोई ऐसा मुकाम मिलेगा। जहां तक मुझसे हो सकेगा मैं उन्हें घोड़े से उतर तरो ताज़ा होने की सलाह दूंगा—जिस वक़् वे बातों में मशगूल हों मौका पाकर अपनी कार्रवाई फौरन् कर लेना चाहिये।"

सर्फ़राज़ खां ने कहा "बेशक, इस्से आसान बात अब क्या हो सकती है? अगर वह एक मर्तबः बैठ जावे तो हम कभी नाकामयाब नहीं हो सकते, उस के तमाम हथियार कुछ भी काम न आवेंगे।

बद्रीनाथ ने कहा "मगर मैं इस काम में नीम रज़ामन्द हूं फ़र्ज़ करिये कि वह होशियार रहे, तो बिलाशक हाथ से जाता रहेगा, और गोकि मैं और मेरे दोस्त खांसाहब शैतान से भी खौफ़ नहीं खाते मगर नव्वाब का मारना आसान बात नहीं है,—यह कोई मामूली बनिज नहीं और मेरी राय में तो इसे बेदाग जानेही देना बेहतर है"।

मैंने कहा "ओह! तुम ऐसी बात कहते हो बद्रीनाथ? मुझे ताज्जुब होता है! अगर वह नव्वाबही हुआ तो क्या? क्या वह इनसान नहीं है? और क्या मैंने अपनी कार के दस्तूर और कायदे के मुआफ़िक़ उसे अपने हाथ में नहीं ले लिया? गोकि नव्वाब का मारना एक नई बात हो, मगर मर्दे-आदमी! ख्याल तो करो कि बहादुरों के बहादुर नव्वाब सब्ज़ीखां के मारने पर हमे कैसा कुछ फ़ख़ हासिल होगा—हमारे बुज़ुर्गों ने भी शायद ऐसे बहादुरी का काम न किया होगा"

उसने कहा "बस इसी लिये तो मैं इस कद्र इसके बर्खिलाफ़ राय देता हूं, तमाम गैरमामूली बातें गैरवाजिब हैं और अकसर भवानी को नापसन्द होती हैं"।

मैंने कहा "अच्छा इसर सगुन ले लो और देखो भवानी की क्या मर्ज़ी है इनशाअल्ला! नव्वाबसाहब ज़रूर हमारे हाथ तले पड़ेंगे"।

उसने कहा "हां, अब आप ठीक सच्चे ठग के मुआफ़िक़ बातें करते हैं,

आज शाम को मैं सगुन लेकर उसका नतीजा आपसे बयान करूंगा, अगर सगुन उम्दा निकला तो बद्रीनाथ हर्गिज़ इस कार में पीछे हटनेवाला नहीं।

खैर शाम को सगुन लिया गया और उम्दा निकला; बद्रीनाथ ने निहायत खुशी के साथ आकर इस अहवाल को मुझ से बयान किया।

मैंने कहा "मैं तो पेश्तरही जानता था, भवानी की इतनी इनायत के बाद उसकी रहमत पर शक करना तुम्हारी सरासर बेवकूफी थी—खैर सुनो मैं इतनी देर तक काहिल न था। मैंने गांववालों से दर्य्याफ़ कर लिया कि यहां से चार कोस के फासले पर एक छोटा सा चश्मा निहायत साफ़ और सुथरे पानी का बहता है। उसके दोनों तरफ़ बहुत घना जंगल जैसा कि हम लोगों को चाहिये लगा है, बस इस कार के लिये मैं उसी मुकाम को पसन्द करता हूं—तुम लोगों की भी सलाह हो तो लूबे भेज दिये जावें"।

बद्रीनाथ ने कहा "बेशक हम लोगों को भी तयार हो जाना चाहिये, मगर नहीं, क्या ज़रूरत है, आप कहते ही है कि जंगल निहायत घना है, हम लोग लाशों को बआसानी कहीं छिपा देंगे, नहीं तो जब नदी हई है तो बालू या सङ्गरेज़े में कब्र फ़ौरन् तयार कर ली जायगी। मगर मीरसाहब! नव्वाब निहायत मज़बूत शख्स है, बेहतर होगा कि आप अकेले उसके साथ जोखिम मत उठाइये, दूसरों की कुछ पर्वाह नहीं मैंने सभों के लिये एक एक होशियार भटोट मुकर्रर कर दिया है, वे सब अपना काम बखूबी अंजाम देंगे"।

मैंने कहा "खूब किया, क्योंकि अब ज्यादा मश्विरा करने का वक्त नहीं है"।

बद्रीनाथ ने कहा "मैंने अपने लिये भी एक शख्स चुन लिया है, वही जिसे लोग नव्वाब का जमादार कहते हैं—मैंने उससे निहायत ज्यादा रब्त ज़ब्त पैदा कर ली है और अब वह मेरे दाम में है, दूसरों ने भी ऐसा ही किया है और नव्वाब साहब को हम लोग आप पर छोड़ते हैं"।

मैंने कहा "वह मेरा हिस्सा है, मैं हर्गिज़ नहीं चाहता कि इसमें कोई मुदाखिलत करे, हां अगर सर्फ़राजखां ने हनोज़ किसी को अपने लिये न तजवीज़ किया हो तो खैर वह मेरी मदद पर रहे"।

उसने कहा "मीरसाहब, जहां तक मैं जानता हूं उसने इनोज किसी को नहीं चुना और वह हमारे मज़बूत शख्सों में से एकही है; उसकी और उसके एक और साथी के मदद के साथ आप हर्गिज़ नाकामयाब नहीं हो सकते। मगर सर्फ़राज़खां से शमशिया का काम लीजिये वह इस फ़न में निहायत होशियार है।

मैंने कहा "नव्वाब के बैठे रहने पर मुझे किसी शमशिया की ज़रूरत नहीं गोकि मुश्किल के वक़ ऐसे शख्स का रहना बेहतर होता है"।

उस रात हमने सब बन्दोबस्त कर रक्खा और दूसरे दिन सुबह को खुशी बखुशी रवाना हुये। मैं और नवाब साहब दोनों साबिक दस्तूर गरोह के आगे आगे चल पड़े।

रास्ते में उन्होंने कहा "मीरसाहब। यह मुल्क निहायत बदवज़ है, क्या आप ने कभी ऐसा बयाबान और भी देखा है कि जहां मंजिल के एक हद से दूसरे हद तक एक कतरा पानी का मर्देसादिक के लब तर करने को भी मुयस्सर न हो? यह हम लोगों की खुशकिस्मती कहना चाहिये कि हवा सर्द है वरना इस कदर दूरोदराज़ की मंज़िल ते करना दुश्वार हो जाता, देखिये न कि आज तीन रोज़ से सब्जीखां को इसीके बाइस मामूली शर्बत तक दस्तयाब न हो सका। अल्लाह जानता है कि इस गर्मी में मेरा गला कौवे के मानिन्द सूख रहा है और मुंह में पपड़ी पड़ी जाती है। क्या उम्दा होता कि अगर ऐसी तपिश में दम भर किसी दर्या या कूंये के पास बैठकर मैं अपना नशा पानी करता"।

मैंने कहा "सब्र रखिये खुदावन्द! कौन जाने कोई चश्मा नज़दीकही हो, वहां हम लोग ठहर कर फ़रहत हासिल करेंगे। मुझे भी भूख लगी है, मैं चाहता हूं कि थोड़ी देर बैठ चन्द छुहारे नाश्ता कर लूं, घण्टे आध घण्टे की देर होगी तो क्या हर्ज है"।

उन्होंने कहा "आहा! छुहारे—छुहारे तो भई मैं भी लूंगा, मेरे लोग मेरे झोले में से कुछ निकाल कर खा पी लेंगे, दरहकीकत आप ठीक कहते हैं कि इन पहाड़ों की सर्द हवा से भूख उभड़ आती है"।

हम लोग कई कोस निकल गये मगर कोई दर्या नज़र न पड़ा। मैं ख्याल करने लगा कि शायद मुझे ग़लत खबर मिली हो और इस मायूसी पर कुछ रंजीदा था कि पहाड़ी के किनारे पहुंचतेही वह दर्या जो गांववालों ने कहा था नज़र पड़ा।

मैंने कहा "देखिये खुदावन्द! आखिरकार पानी वह नज़र आया और उसकी चमक से मालूम पड़ता है कि पानी सफ़फ़ाफ़ काबिल पीने के है। अगर तबीयत हो तो घण्टा भर ठहर कर ज़रा हरे हो लीजिये। हम लोग भी एक कश हुके की ले लेवें, तब तक आप की लौंडी शर्बत तयार कर देगी"।

"बेशक" उन्होंने कहा "शायद आगे कोई ऐसा मुकाम न मिले, ऐन इसी वक़् में शर्बत ज्यादा पसन्द करता हूं, ज़रा किसी को पीछे मेरी लौंडी के पास भेज दीजिये कि वह फ़ौरन् हाज़िर हो"।

मैंने उसीदम एक शख्स को उसके बुलाने के लिये भेजा और दर्या के पास पहुंच एक उम्दा सा हरे दूब का मैदान पसन्द कर अपना २ पारजामा बिछा हम दोनों बैठ गये।

एक एक करके सब लोग आहिस्ते २ पहुंचने लगे; कोई बैठ गया और कोई दर्या में हलकर हाथ मुहँ धोने लगा, पानी इसका निहायत साफ़ चमकते हुये संगरेज़ों पर से बहता था। जानवर भी सब पानी पीने के लिये खोल दिये गये और तमाम लोग पांच पांच सात सात इकट्ठे बैठकर हुक्का-कशी करने लगे; कोई खुशी बखुशी गुज़रे हुये रास्ते का अहवाल बयान करता कोई आगे की ज़िक्र छेड़ता, कोई खड़ा और कोई लेटा था। मैंने एक निगाह फ़ौरन् चारो तरफ़ फेरा देखता क्या हूं कि सब अपने २ मौके से लगे हैं, नव्वाब साहब के हरएक नौकर और मुसाहब के पीछे मेरे तीन तीन ठग घात से बैठे हैं। इसलिये इन सभों को अपने शिकार का पक्का यक़ीन था। अज़ीमा की गाड़ी सड़क पर खड़ी थी, मैं उसके पास इस इरादे से पहुंचा कि इसे किसी तरह यहां से हटाना चाहिये।

मैंने कहा "प्यारी, मैं यहां थोड़ी देर के लिये ठहरा हूं ताकि मेरे लोग ज़रा आराम कर लेवें बेहतर है कि तुम तब तक आगे चलो, रास्ता भी बराबर है और हम लोग फ़ौरन् तुमसे आ मिलेंगे"।

उसने कहा "बहुत अच्छा, कह दीजिये कि गाड़ी हांके में भी टिकने के मुकाम पर जल्द पहुंचा चाहती हूं। मैं और बिचारी नर्गिस तो दोनों इसमें हिलते २ मर गईं"।

मैंने कहा "अफ़सोस क्या किया जाय, एक दो मंज़िल तो तुम इसे बर्दाश्त करलो, औव्वल गांव या शहर में पहुंचतेही मैं तुम्हारे लिये एक डोली किराये कर लूंगा और उसमें तुम्हें बहुत आराम रहेगा"।

इतना कह मैंने उस ठग से जो बैलवाले की जगह बैठा था आहिस्ते २ गाड़ी हांकने के लिये कहा। साहब मैं आप से अर्ज़ करना भूल गया था कि बीडर से रवाना होने के बाद मैंने रास्ते में एक गाड़ी खरीद ली थी जिस के हांकने के लिये मैंने अपना एक ठग मुकर्रर कर दिया और वही तब से बैलवाले का काम करता था।

अज़ीमां तो उधर रवाना हुई, इधर मैं नव्वाब साहब के पास पहुंचा जो बैठे हुये मेरे वालिद से गुफ़्तगू कर रहे थे और उन्हें कुछ सुरूर उस प्याले का जो पेश्तर पी चुके थे आ गया था।

मुझे देखते ही बोले "मीरसाहब! आप क्या कर रहे हैं? देखिये मैं तब से आप के वालिद साहब से कह रहा हूं कि एक प्याला इस शर्बत का लीजिये मगर ये इन्कारही करते जाते हैं—अल्लाह जानता है कि यह शर्बत शायद बिहिश्त में भी मुयस्सर न हो और तिस्पर भी ये कहते हैं कि यह कडुआ होता और इनके माद्दे से माफ़कत नहीं रखता। खैर न हो, आपही एक प्याला लीजिये" यह कह कर उन्होंने प्याला भर मेरे आगे किया और मैं कुछ शशोपञ्ज में पड़ा, वे बोले "पी जाओ म्यां, यह आप को बड़ा फ़ायदा करेगा और सर्दी से महफूज़ रक्खेगा, इस बात का मैं ज़िम्मा लेता हूं कि चीज़ उम्दा तयार हुई है क्योंकि हिंदोस्तान के दसो बादशाहत के पर्दे में ऐसी दूसरी लौंडी पैदा नहीं हुई जो इस सब्ज़ी बनाने के फ़न् में करीमा का मुकाबिला कर सके। क्यों करीमा ठीक है न?।"

उसने कहा "यह हुज़ूर की इनायत इस लौंडी पर है—अगर हुज़ूर खुश हैं तो बन्दी और किसी बात की पर्वाह नहीं करती"।

नव्वाब साहब ने कहा "तो ले आ दूसरा प्याला; क्योंकर वह मिसरा है? 'प्याला पिया तो मैंने पिया फिर किसी को क्या'? तमाम दुनियां जानती है कि सब्ज़ीखां भांग पिता है फिर क्या किसी से सिपहगीरी में कम है? इस वक़ दो एक खूबसूरत रण्डियां गज़ल गानेवाली होतीं तो मैं ख्याल करता हूं कि इस जंगल बयावान के साम्हने बिहिश्त को भी क्या रुतबा था।"

मैंने भी उनकी हां में हां मिलाकर कहा "नव्वाबसाहब! दरहकीकत यह निहायत उम्दा होता, खैर आगे के गांव से हमलोग चन्द तवायफ़ साथ ले लेगें, उम्मेद है कि वे लोग दो एक मञ्ज़िल तक हमारे साथ बेउज्र चली चलेंगी।

उन्होंने आहिस्ते लड़खड़ाते हुये ज़बान से कहा (क्योंकि नशे का कुछ सुरूर आगया था) मीरसाहब! आप खूब कहते हैं, आपकी राय बहुत अच्छी, दरहकीकत बहुत अच्छी है। इनशाअल्ला वहां चलकर रण्डियों को ज़रूर हमराह लेना चाहिये—अल्लाह जानता है कि उन्हें भी इसी तरह नाचना होगा" इतना कह वे उठ खड़े हुये और हाथ फैला, हम लोगों की तरफ़ आंखे चमका ठुमुक २ कर दो एक चक्कर नाच गये।

उस वक़ नव्वाब साहब की शक्ल देख मुझे बेइख़्तियार हँसी आती थी, उनका वह जंगी ज़िरहबक्तर और वह सिपाहियाना लिबास उनके उस मटकने और आंखे चमकाने से बिलकुल बेजोड़ और बेमेल था और हम सब खूब कहकहा मारकर हँसे।

मगर अब दिल्लगी ज़्यादा बढ़ने लगी और हम लोगों को इस तरह बेवकूफी में वक़ और मौका ज़ाया करने की बनिस्बत कारे ज़रूरी दर्पेश था। पस मैंने नव्वाब साहब से इल्तिजा की कि वाह! आपने खूब दिल्लगी की, बेशक आगे चल कर हुज़ूर के हुक्म की तामील की जायगी, आइये बैठिये"। मैंने सर्फ़राज़ खां से इशारतन् कह दिया कि जब मैं उनके पीछे जाऊं तुम फौरन् तयार रहना।

नव्वाबसाहब ने बैठतेही उस लौंडी से कहा "करीमां! ज़रा और तो सब्ज़ी ला, अल्लाह जानता है कि आज की प्यास बुझती ही नहीं और तूभी आज

हर रोज़ से उम्दा सब्ज़ी तयार कर रही है—मेरी तबीयत और चाहती है, वरना आज मैं इस मंज़िल तक नहीं पहुंचा चाहता, मेरी आंखों में नींद घिरी आती है और एक या दो प्याला पीने से फिर तबीयत हरी हो जायगी"।

मैंने खूब ज़ोर से आवाज़ दी "फ़ाजिलखां, हुक्का लाओ "बस यही इशारा मुक़र्रर हो चुका था; नव्वाब साहब ने कहा "मैं भी दो एक कश लूंगा इस शर्बत पर हुक्का निहायत लज़ीज़ मालूम होगा"।

तब तक मैं नव्वाबसाहब के पीछे जा रहा और रूमाल हाथ में ले मैंने सर्फ़राज़ खां को उनका हाथ पकड़ने के लिये इशारा किया।

उसने नव्वाब साहब का दहिना हाथ खूब मज़बूती से गिरफ़ कर कहा "देखिये तो नव्वाब साहब"—

उन्होंने गुस्से से कहा "क्यों बे नामाक़ूल—तेरी इतनी बड़ी हिम्मत कि तू नव्वाबों को हाथ लगावे" वह इतना कहतेही थे कि मैंने फ़ौरन रूमाल उनके गले में दिया, सर्फ़राज़ खां हाथ पकड़ेही था वालिद ने दोनों पैर पीछे से खींच लिया। नव्वाब साहब मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़े और उनका गला यों खर्खराने लगा गोया कोई शख्स भरपूर नींद में घुर्राटे लेता हो। मैंने इस ज़ोर से रूमाल कसा कि घोड़े का भी दम न बच सकता था नव्वाब बिचारे की क्या हक़ीक़त थी कि दम मारे। जिस वक्त वह मेरे रूमाल के नीचे तड़फ रहा था उसकी तमाम नसें खड़ी हो गयीं, वह और भी ज़ोर से घुर्राटे लेने लगा और अब उसका जिस्म आहिस्ते २ मुलायम पड़ता जाता था मैंने रूमाल छोड़ दिया और देखा कि उसमें बिलकुल दम नहीं है। इस तरह मैंने उस बहादुर नव्वाब सब्ज़ीखां का काम तमाम किया जिसने अपनी शमशेर से जङ्ग में सैकड़ों का सिर धड़ से अलग किया था।

मगर किसी ने भी अब तक उस लौंडी का ख्याल न किया जो हम लोगों की तरफ़ पीठ किये, कुछ दूर बैठी नव्वाब साहब के लिये भंग तयार करने में इस क़दर मशगूल थी कि हमारे इस झगड़े की आवाज़ और नव्वाब साहब के चन्द शख्सों की खर्खराहट उसके कान में मुतलक न पड़ी। वह उसी गौर से प्याला हाथ में लिये उस जगह पहुंची जहां सर्फ़राज़ खां नव्वाब साहब की लाश से ज़िरहबख़्तर वग़ैरह उतारने में लग रहा था।

या अल्लाह! या अल्लाह! साहब, नव्वाब की लाश पर निगाह पड़ते ही किस ज़ोर की चीख़ उसके गले से निकली कि जिसका बयान मैं आप से नहीं कर सकता। मैं उसे ताउम्र नहीं भूल सकता कि किस जोश और मोहब्बत के साथ वह दौड़ कर नव्वाब साहब के लाश पर जा गिरी। साहब, गोकि उनमें मालिक और लौंडी का रिश्ता था मगर दोनों में अज़हद मुहब्बत थी।

वह बार बार लाश का बोसा लेती और हर तरह की मोहबत की बातें जो वे दोनों आपस में तखलिये के वक़्त करते थे, करने लगी।

साहब कुछ देर बाद वह खूबसूरत लौंडी उठ खड़ी हुई और उसके चेहरे के दोनों तरफ़ काले घुंघराले बाल लहरा रहे थे जिन्हें वह बारहा आंखों पर से हटा २ देती थी, उस वक़्त उसकी खूबसूरती और हालते परेशानी देख मुझे निहायत अफ़सोस और रंज होता था।

वह फिर उस लाश से लिपट कर ज़ार ज़ार रोने और नाले मारने लगी। "हाय! हाय! अरे किसने इनके साथ यह ज़ुल्म किया, ये किसको आंखें बाहर निकली आती हैं। अब करीमां से कौन प्यार की बातें करेगा। हाय! मेरा कलेजा फटा जाता है"।

मैंने कहा "यह क्या बात है? तुम लोगों में से एक शख्स इसे फ़ौरन् तकलीफ़ से रिहा करो, मैं खुदही ऐसा करता मगर मैं औरतें पर हाथ नहीं उठाया चाहता"।

सर्फ़राज़खां ने कहा "यह निहायत खूबसूरत है, मैं इसकी जिन्दगी छोड़ दिया चाहता हूं"। यह कह कर उसने उससे कहा "सुन, अब अपनी बेवकूफ़ी छोड़"। फिर उसने उसका बाज़ू लाश पर से अपनी तरफ़ ज़ोर से खींच लिया उस बिचारी ने उसके चेहरे की तरफ़ खौफ़से घबड़ाकर देखा और लाशकी तरफ़ उंगली से इशारा करने लगी। सर्फ़राज़खां ने कहा "सुन, अगर तू मेरा कहना नहीं मानती, तो ये लोग तुझे भी मार डालेंगे। मेरी शादी नहीं हुई है, तू मेरी बात मान और मेरे साथ चल, क्यों बेफ़ायदा मुर्दों के पीछे अपने जिन्दगी से हाथ धोती है। उसकी तो तू लौंडी भी थी मगर मेरी फ़कत बीबी होगी, बस उठ खड़ी हो—, मैं तेरी जिन्दगी माफ़ करता हूं"

उसनें निहायत आहिस्ते से कहा "कौन बोलता है ? हाय ! मुझे इनके पास से मत हटाइये, मेरा दिल टूट गया है, अब मैं भी मरा चाहती हूं मुझे इनसे अलग मत कीजिये"।

सर्फ़राज़ खां ने गुस्से से कहा "सुन बेवकूफ़, इस तमाम गरोह के रूबरू मैं तुझसे इक़रार करता हूं कि मैं तेरी ज़िन्दगी बखुश तुझे हमेशा आराम से रक्खूंगा मगर तू नहीं सुनती,—देख अपने क़िस्मत की ज्यादा आज़माइश मत कर, बस मेरा कहा मान वरना तुझे अभी क़त्ल करता हूं। कह तू मेरे साथ चलेगी या नहीं ? घोड़ा तयार है हम लोग लाशों को यहीं छोड़ अब रवाना होते हैं और तूभी इस कमबख्त नव्वाब का ख्याल दिल से दूर कर"।

उसने कहा 'मैं इन्हें क्योंकर भूल जाऊं?—क्योंकर इनका ख्याल दिल से दूर करूं? जब इन्हीं की मौत हुई तो मैं अब जी कर क्या करूंगी"।

सर्फ़राज खां ने गुस्से से कहा "फिर भी मैं तुझे समझाता हूं, कमबख्त ! देख मुझ से ज़बरदस्ती मत करा, मैं चाहता हूं कि तू अपनी रज़ामन्दी से मेरे साथ चल—देख अभी तक मैंने तुझ पर हाथ नहीं छोड़ा है"।

वह इसके जवाब में कुछ न बोली और फिर उसी लाश से लिपट आहिस्ते२ रोने लगी।

मैंने लूवों को जो वहीं खड़े थे हुक्म दिया "फौरन् लाशों को उठाओ और दफ़न करो—क्या तुम सब भी उसी कमबख्त छोकरी की तरह इश्क़ के मरीज़ हो गये है ? वह तो योंही रोती पीटती ही रहेगी तो क्या हम लोग भी योंही खड़े रहेंगे?उठाओ फ़ौरन् और अभी सबों को दफ़न करो"।

हुक्म देतेही फौरन् चार लूवों ने नव्वाब की लाश उठा ली; वह लौंड़ी रोती ही पीटती रही मगर किसी ने भी कुछ लिहाज़ न किया। दो शख्सों ने उसे पकड़ लिया, गोकि उसने अपनी तईं छुड़ाने की हज़ारहां कोशिश की मगर क्या होसकता है, आखिरकार रोते २ बेदम होगई"।

लाशों के दफ़न होजाने पर मैंने सर्फ़राज़ खां से कहा "देखो अब तुम्हारा वक्त है चूंकि तुम उसे चाहते हो, इसे उठाकर घोड़े पर रक्खो और पकड़े रहो, अगर तुम इसे खामोश न कर सको तो यह तुम्हारा क़ुसूर है"।

सर्फ़राज़ खां ने उसे आसानी से उठा ले जाकर घोड़े पर बैठा दिया, वह हम सबों को हज़ारों गालियां देती और अपने तईं मार डालने की बार बार इल्तिजा करती थी। उसका चिल्लाना गज़बनाक था और गोकि एक तरफ़ सर्फ़राजखां और दूसरी तरफ़ एक दूसरा शख़्स उसे घोड़े पर पकड़े था मगर वे दोनों उसे किसी तरह रोक न सकते थे।

हम लोग करीब आध कोस के इसी तरह चले गये। मैं उस लौंडी को चुप कराने और आराम से बैठने की ख़्वाहिस से दिलासा दे रहा था कि वालिद ने जो अब तक चुप चाप यह तमाशा देख रहे थे आकर मुझसे कहा "यह महज़ बेवकूफ़ी बल्कि पागलपन की बात है, और तिसपर सर्फ़राजखां अफ़सोस। तुम ऐसी उजलत में इस लड़की पर इसकदर फ़रेफ़्ता होजाओ! अगर रास्ते में कोई मुसाफ़िर मिल जावें तो हम क्या करेंगे? यह बेशक तमाम अह-वाल बक जायगी और उस वक़्त फिर क्या नतीजा होगा?—अफ़सोस! सद्द अफ़सोस कि तुम इस क़दर हलकी सी बात अपने कार की नहीं जानते"।

वह शख़्स जो घोड़े के बांये तरफ खड़ा था उसे छोड़ कर आज़ुर्दा हो कहने लगा "अब खां साहब आप जानें और यह। मुझसे कुछ नहीं होसकता, मैं देखता हूं कि मंज़िल पहुंचने पर यह लौंडी और घोड़ा दोनों मुझे तकलीफ़ देंगे"।

मैंने कहा "अफ़सोस, क्या तुम ख़्याल करते हो, कि मंज़िल पहुंचने पर इसकी ज़ुबान बन्द रहेगी? तब उस वक़्त तुम क्या करोगे"?

सर्फ़राज़खां ने म्यान सहित तलवार से उसके चेहरे पर मार कर कहा "कम्बख़्त! क्या तू चुप न रहेगी कि मैं घोड़े को आसानी से ले चलूं?" तलवार इस ज़ोर से लगी कि म्यान कट कर उसके चेहरे पर सख़्त चोट आई और जख़्म में से ख़ून टपकने लगा"।

वालिद ने कहा "देखो, तुमने उसकी खूबसूरती भी ज़ाया की अब और क्या किया चाहते हो?"

उसने कहा "खैर, यह किसी तरह चुप तो हुई" और वह घोड़े की लगाम पकड़ रवाना हुआ। यह चोट उसे इस ज़ोर से लगी कि उसका सिर घूम

गया मगर बादज़ां कुछ देर के उसे फिर होश हुई। खून उसके चेहरे से टपक रहा था जिसे उसने अपने हाथ से पोंछ डाला और कुछ देर तक उस खूं-आलूदा हाथ को देख आखिरकार बड़े ज़ोर से ज़मीन से गिर पड़ी।

सर्फ़राजखां ने कहा "ज़रा एक शख्स घोड़े को पकड़ो तो, मैं इसे फिर सवार कराता हूं" मगर वह इस मर्तबः हरबार से ज्यादा चिल्लाती और छट-पटाती थी, यहां तक कि सर्फ़राजखां ने गुस्से से तलवार उठाई।

"मार"! उसने कहा "खूनी कबमख़्त! देखता क्या है मार, और इस गरीब लौंडी की जान खतम कर, अब तो तू मुझे ज़ख्मी करही चुका है, बस एक हाथ और मार कि मैं इस तकलीफ़ से रिहाइ पाऊं, बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर गई होती मगर मुझ कम्बख़्त को मौत भी नहीं आती। क्या तू मुझे न मारेगा? "इतना कह उसने उसके ऊपर थूक दिया।

खां ने तलवार म्यान की और कहा "बस, अब मैं ज्यादा बर्दास्त नहीं कर सकता, मैं बेवकूफ़ था जो मैंने तुझ कम्बख़्त की जां रिहाई के लिये इस क-दर तकलीफ़ उठाई, "देख मैं तुझे अभी खतम करता हूं"। इतना कह उसने रूमाल निकाल उसके गले में दिया और वह उसके हाथ तले छटपटा कर वहीं मर गई।

सर्फ़राज़ खां ने रूमाल छोड़ कर कहा "अफ़सोस! मैं चाहता था कि इ-सका यह अंजाम न होता, मगर यह उसकी किस्मत थी"इतना कह वह लाश से अलग होकर चुप चाप खड़ा हो उसकी तरफ़ एकटक देखने लगा।

चन्द लुघाइयों ने आकर लाश को सड़क के किनारे झाड़ियों में फौरन् दफ़न् कर दिया और चूंकि अब हमें कोई रुकावट न रही हमने सफ़र में तेज़ कदम उठाया। शुक्र था कि मैंने अज़ीमां की गाड़ी आगे रवाना कर दी थी वरना अगर वह कहीं नज़दीक होती तो उस शुब वगैरह की सुनकर उ-सने ज़रूर उसका सबब समझ लिया होता, मगर बैलवाला गाड़ी को बहुत तेज़ हांककर आगे निकल गया था और हमें उसके मुकाबिल पहुंचने के लिये कई कोस चलना पड़ा। ताज्जुब की बात है साहब, कि उसी दिन से सर्फ़राजखां फिर कभी खुशदिल या हँसता हुआ नज़र न आया। वह अपने

काम पर मुबतदी न था बल्कि सैकड़ों मर्द और औरत इसके पेश्तर उसके हाथ तले मर चुके थे, मगर जिस वक़ से कि उसने उस लौंडी को मारा वह गोया एक दम तबदील हो गया। वह घण्टोहीं चुपचाप बैठा एकटक हवा की तरफ़ देखा करता और जब हम लोग उसे ज्यादा दिक़ करते तो उसके जवाब में फ़क़त मुस्करा देता और सिर हिलाकर यही कहता कि मेरी वह तबीयत न जाने कहां जाती रही; बाज़ वक़ उसकी आखें भर आतीं और वह दिल-शिकस्तों की मानिन्द आह सर्द खींचा करता था।

वह घर तक हमलोगों के साथ आया और अपना हिस्सा लेकर गरोह के गरीबों को बांट, हम लगों से विदा हो, कपड़े उतार, ख़ाक रमा, फ़क़ीरों का का भेस धर न जाने कहां चला गया।

बरसों के बाद मैंने सुना कि वह उसी मुकाम पर जहां उसने उस लौंडी को मारा था पहुंचा और सड़क के किनारे एक झोपड़ी बना रहने लगा, उसी उजाड़ में आते जाते मुसाफिरों की खातिर करता और जंगल में शेर चीते और भेड़ियों के दर्म्यान पड़ा रहता। मुझ से इलाहिदा होने के बाद मैंने उसे फिर न देखा और बादशां की चढ़ाइयों में हम लोग उसके लिये निहायत रंज वो अफ़सोस करते थे क्योंकि उसके मुकाबिल दिलेर और हिम्मतवर शख़स दूसरा न मिला—उसको जगह हमेशा खालीही रही।

साहब, अब इस चढ़ाई में कोई ख़ास बात काबिल बयान नहीं है, हमलोग कुछदिन बाद बगैर किसी रुकावट या तरद्दीये के अपने२ मकान पर पहुंच गये और हर एक शख़स सफ़र की तकलीफ़ों के बाद मुद्दत के छुटे हुये घर को पा बआराम रहने लगा। अज़ीमां की मुहब्बत मुझसे रोज़ बरोज़ बढ़ती जाती और उसकी नेकमिजाजी और नेकखसलत से मैं निहायत खुश व खुर्रम रहता था। मैंने अपने साथियों के निगाह में निहायत ऊंचा दर्जा पाया क्योंकि मेरी अक़्लमन्दी, बहादुरी और कामयाबी का ज़िक्र उन तमाम साथियों को मुफ़स्सल सुना दिया गया जो गांव में पीछे रह गये या छोटे मोटे चढ़ाइयों पर इधर उधर गये थे। इस चढ़ाई में बेशुमार दौलत हासिल होने की शोहरत, और मेरे वालिद के गोशानशीनी इख़्तियार करने की ख़्वाहिश ने मुझे सबकी नि-

गाह में वह दर्जा हासिल कराया कि सब लोगों ने मुझे निहायत किस्मतवर सर्दार तसौव्वर किया और आइन्दे की चढ़ाइयों में सभों ने मेरी मातहती कुबूल करने में अपना फ़ायदा और फ़ख समझा क्योंकि लोगों का यही ख्याल था कि मुझ पर भवानी की इनायत और रहमत सब से ज़ाइद और अज़हद दर्जे की है।

हमारे पहुंचने के दो माह बाद हुसैन का गरोह भी गांव में वापस आया, हम सभों को आपस में मिलने से निहायत खुशी हासिल हुई। जैसा कि इलाहिदा होने के वक़्त हम लोगों में इक़रार हो चुका था दोनों गरोह की आमद का माल एक जगह जमा हुआ और एक दिन खास मुकर्रर कर तक़सीम कर दिया गया। साहब, शायद आप को बमुश्किल एतक़ाद होगा कि यह तमाम माल अनक़रीब एक लाख रुपये के जमा हुआ था।

तमाम काफ़िले की राय इस बात पर मुक़द्दम् हुई कि मुझे बतौर जमादार के हिस्सा दिया जाय, पस बमूजिब क़वायद अपने गरोह के मुझे तमाम माल का आठवां हिस्सा दिया गया। बद्रीनाथ और सर्फ़राज़ खां को भी मेरे ही मुआफ़िक मिला मगर सर्फ़राज़ खां को उस माल में से हिस्सा दिया गया था जो उसके शामिल होने के बाद हम लोगों को हासिल हुआ था। मुझे ठीक याद नहीं है कि उसने कितना पाया मगर जैसा कि मैं आप से पेश्तर अर्ज़ कर चुका हूं कि उसने अपना तमाम माल गरोह के मोहताज लोगों को तक़सीम कर दिया और मालूम पड़ता है कि वह खास इसी गरज़ से इतने दिनों तक हम लोगों के साथ ठहरा हुआ था, इसके बाद जैसा कि मैं पेश्तर बयान कर चुका हूं वह हम लोगों को छोड़ फ़क़ीर बन जंगल की सैर को निकल गया।

मैंने इस दौलत से दो बरस तक बआराम औक़ात बसर की। अकसर मेरी ख्वाहिश होती कि मैं इधर उधर के मुलकों में चढ़ाई करूं मगर मेरे वालिद हर्गिज़ न सुनते थे बल्कि मेरे कहने पर यही जवाब देते कि—"क्या ज़रूरत है! अभी और दो बरस तक बआराम खाने पीने के लिये तुम्हारे पास दौलत काफ़ी है, तुम जानते ही हो कि मेरे पास भी दौलत बहुत है पस जब

तक हम लोगों को इसकी कमी न हो तब तक क्या ज़रूरत है कि हम ना-हक अपनी जान खतरे में उस दौलत के लिये डालें जिसकी हमे हनोज़ कुछ दरकार नहीं है ?"

मैं यह सुन कर चुप रहता मगर मेरी तबीयत इस किस्म की सुस्त और हकीर ज़िन्दगी से आरिज़ थी, जब कभी मैं ठगों के बहादुरी का ज़िक्र सुनता मेरी तबीयत अन्दर से जोश खाती और मुझे इस बात का खौफ़ होता कि शायद मैं हमेश के लिये सुस्त न होजाऊं और इसी लिये अक़सरैनो चढ़ाई करने की मेरी खाहिश और भी ज़्यादातर होती थी।

ताहम् मेरी मुहब्बत घर से ज्यादा थी। मुझे एक लड़का अज़ीमा से हो चुका था जो मेरे अँधेरे घर का चिराग था और जिस वक़ का ज़िक्र मैं कर रहा हूं मुझे एक और औलाद की उम्मेद थी। चढ़ाई के दो ऐय्याम तो देखते ही देखते निकल गये और तीसरे बरस का मौका भी करीब आ गया था मगर गोकि बद्रीनाथ और चन्द दूसरे साथियों ने मुझसे बार बार चलने की इल्तिजा की और कहा कि बंगाल में ज्यादा कामयाबी और उम्मेद है मगर मैंने आज कल करते २ वह ऐय्याम भी गुज़ार दिया।

ज्यों ज्यों मेरी खाहिश उन्हें साथ लेकर चढ़ाई करने की ज़ादा होती त्यों त्यों मेरे वालिद मुझे ज़ादातर मना करते थे; उन्हें न मालूम क्योंकर यह ख्याल होगया था कि यह चढ़ाई नाकमयाब होगी और इसका नतीजा बद होगा। और दरहकीकत ऐसाही हुआ। दसहरे के दिन कई अफ़सरों के मातहत एक भारी गरोह ठगों का हमारे गांव से रवाना हुआ; सगुन गोकि बिलकुल खराब न थे तौभी उम्दे और समर:दार न हुये और इसका असर तमाम गरोह के दिल पर था। अभी वे लोग बहुत दूर न गये थे कि सर्दारों में हिर्स हदस और झगड़ा उठ खड़ा हुआ, वे लोग इलाहिदा २ होकर मुख़्लिफ जानिबों में बँट गये। बाद चंद दिनों के वे लोग एक एक कर पहुंचने लगे, मगर किसी भी गरोह के हाथ काफी माल न लगा कि एक बरस भी अपनी औकात बसर कर सके और सब के सब मायूसी के साथ वापस आये। एक गरोह का तो कुछ भी पता न लगा, इसमें मेरा वही पुराना दोस्त बद्री-

नाथ था जो अपने छ सात उम्दे और मज़बूत ठगों को हमराह लेकर गया था । मैंने सुना कि वह बंगाले की तरफ़ गया और कलकत्ते तक बखूबी कामयाबी के साथ पहुंचा मगर वहां उसके लोगों ने तमाम माल ऐयाशी और रण्डीबाजी में उड़ा दिया यहां तक कि लौटते वक़्त चन्द मञ्जिलों के लिये भी उनके पास काफ़ी ख़र्च न था ।

बनारस के करीब पहुंचने पर वे लोग भूखों मरने लगे, पस उन लोगों ने चन्द मुसाफ़िरों पर हमला किया और अपने जान उनका काम तमाम कर डाला । उन लोगों ने लाशों को दफ़न भी न किया और उन्हें वहीं छोड़कर चलते हुये, ख़ुदा की शान उनमें से एक शख़्स कुछ जीता था जो थोड़े अर्से के बाद उठ खड़ा हुआ और उसने जाकर नज़दीक के गांववालों को खबर दी मेरे वे सब दोस्त बिचारे फ़ौरन् गिरफ़्तार होगये, माल तमाम पहिचाना गया और उस शख़्स की गवाही सबूत में काफ़ी थी जो उन मुसाफ़िरों में से जीता बच गया था । बस अब क्या होसकता था ? बादज़ां मुकद्दमा फ़ैसल होने के उन सभों को बनारस में फांसी दी गई ।

इतना कहकर अमीरअली ठहर गया और बोला साहब! अब मुझे इजाज़त हो तो मैं कुछ खा पी लूं, फिर जब हुक्म होगा मैं आकर मुफ़स्सल अहवाल आपको सुनाऊंगा । मैंने कहा बहुत बेहतर । वह उठ खड़ा हुआ और सलाम कर अपने मकान की तरफ़ रवाना हुआ ।

उसके चले जाने पर मैंने ख्याल किया कि यह भी दुनिया में एक अजीब शख़्स है जो सैकड़ों खून करके भी गुज़री हुई बातों को खुशी और आसूदगी के साथ ख्याल करता है, बल्कि उनके बयान करने में फ़ख़्र समझता है। इसका तमाम बयान खून और क़त्ल का है और इसके ज़िक्र करते वक़्त इसे ज़रा भी रंज या अफ़सोस नहीं होता । इस तमाम बयान में वह फ़कत एक या दो मर्तबः कांपा था मगर शुरू ही में वह क्यों इस क़दर कांप उठा अभी तक सुनना बाकी था ।

फ़कत इस वारदात को छोड़ कर उसका जोश हर बयान के साथ बढ़ता ही जाता था, वह इस फ़साहत और चर्बज़ुबानी के साथ अपनी याददाश्त की

बातों का ज़िक्र करता कि मैं हर्गिज़ उसे किसी तरह ज़ाहिर नहीं कर सकता हूं। जो हो मैं फिर भी यही कहूंगा कि यह इन्सान के ज़िन्दगी का एक अजीब अहवाल है। इस दुनियां के आगाज़ से ले कर आज तक हर एक सरज़मीन में खूनी होते आये हैं—कोई नफ़रत या हिर्स से, कोई हदस या खौफ़ से और कोई सैकड़ों ही तरह की खराब नीयतों से खून करता है मगर खूनी की ज़िन्दगी हमेशः हज़ारों तरह के तकलीफों से पुर रहती है —उसका दिल ही उसके गुनाहों का गवाह है, यह वह कीड़ा है जो हर्गिज़ नहीं मरता, शबोरोज़ उसके कलेजे को काटता और खाता जाता है यहां तक कि वह अपनी ज़िन्दगी से खारिज़ आकर या तो खुद खुदकशी करता या सज़ा पाने के लिये अज़खुद हाज़िर हो जाता या उसी के रंज और सदमे से गल कर मर जाता है। खूनियों का आखिरी नतीजा हमेशा ऐसा ही सुनने और पढ़ने में आया है मगर इन ठगों का हाल इन से कहीं मुखलिफ़ है। इन के दिल पर रंज या अफसोस या तोबा का नामोनिशान नहीं होता। लोगों को ख्याल होगा कि शायद बरसों कैद रहने और सख्त तकलीफ़ उठाने के बाद वे अपनी पुरानी आदत को छोड़ दें और उस का हर्गिज़ ज़िक्र न करें—नहीं, वे औरों की तरह खाते पीते सोते और कपड़े पहिनते हैं मगर हमेशा अपना पुराना ख्याल कायम रखते और अगर आज आज़ाद कर दिये जावें तो कल ही अपने रोज़गार को ज़्यादा जोश के साथ शुरू करेंगे। ताअज्जुब की जगह है कि दोनों हिन्दू और मुसलमान चाहे किसी फिर्कें के क्यों न हो इसकी बुनियाद पर पक्का यकीन रखते और उसकी पाबन्दी अदा करते हैं। हिन्दुओं पर तो कुछ ज़्यादा ताज्जुब नहीं होता क्योंकि तमाम अहलेहनूद देवी की पूजा और इज़्ज़त करते हैं मगर हैरत तो इन मुसलमानों पर है कि वे बुतपरस्ती के इस-कदर बखिलाफ़ हो कर क्योंकर ऐसी बातें पर एतकाद कर इस कार को उठाते हैं? कुरान शरीफ़ में लिखा है कि खूनियों को सख्त सज़ा होगी और रसूलल्लाह का हुक्म है कि खून के बदले खून, आंख के बदले आंख और दांत के एवज़ दांत देना होगा। अमीरअली देखने में खासा भला आदमी है और जेलखाने के अफ़सर लोग भी उसे ऐसा ही समझते हैं। वह

खासा मज़हबी शख्स है जिसने लड़कपन से आज तक हमेश दिन में पांच मर्तबः नमाज़ पढ़ी है, अपनी चालचलन और रहन का निहायत सीधा शख्स है—हमेशा वज़ू करता और रमज़ान वगैरह में रोज़ा रखता, मोहर्रम में सब मातमी पोशाक पहिनता और हिन्दोस्तान के उम्दे सैय्यदों के माफ़िक छाती पीटता और बाल बिखारे रहता था:—किस्साकोताह यह कि वह अपने मज़हब के एक हज़ार एक रस्मात अदा करता और बिहिश्त और हूर वगैरह की दस्तयाबी का इतना यकीन रखता है कि जितना किसी सादिक मुसलमान को होगा।

ताहम् अमीरअली खूनी है—वह खूनी कि जिसके रोबरू दुनियां के तमाम लुटेरे और खूनी नाचीज़ और और हकीर हैं। मैंने उसे जर्मनी और इटली वगैरह के लुटेरुओं का अहवाल सुनाया मगर इस पर अमीरअली खूब कहकहा मार हँसा और बोला कि साहब उनके ऐसे तो हमारे यहां कुत्ते बिल्ली काम किया करते हैं"।

मेरे दिल में ये ख्यालात गुज़र रहे थे कि मैं यकबयक ज़ोर से बोल उठा "छि: इसका पता लगाना फ़ज़ूल है लेकिन ठगी की बुनियाद किस्मत के एतकाद और बातिलमज़हबी पर है, इसी से वे ख़यालात जोश खाते हैं जो इनसान कभी किसी हालत में भी करने की हिम्मत न करेगा"।

मेरे इस आवाज़ को सुनकर पंखेवाला जो बाहर बैठा ऊंघ रहा था चौंक कर अन्दर आया और बोला "क्या खुदावन्द ने बुलाया है"?

मैंने कहा "नहीं बुदन, मैंने तो नहीं बुलाया, पर चूंकि तुम जागतेही हो किसी से चिलम लाने के लिये कहदो, मैं ज़रा अपनी तबीयत गर्म किया चाहता हूं"।

ठगवृत्तान्तमाला।

एक हफ़्त: के बाद अमीरअली का दूसरा बयान।

पचीसवां पर्व्व।

एक हफ़्ते बाद अमीरअली ने कहला भेजा कि अगर हुज़ूर सुना चाहें तो मैं आकर अपने आगे का ज़िक्र अर्ज़ करूं, मैंने उसे फ़ौरन बुलवा भेजा। उसने आतेही झुककर मामूली सलाम की और मैंने उसे बैठने के लिये कहा।

आप लोगों को शायद उस शख़्स की शकल और शबाहत जानने की बहुत ज़ियादा ख़्वाहिश हो रही होगी जिसका अहवाल आप इतनी देर से सुन रहे हैं और जिस्से मैं भी अर्से से बातें कर रहा हूं, इस लिये आप लोगों की ख़्वाहिश पूरी करने के लिये मैं अमीरअली की शबाहत बयान करता हूं। कद में उसकी लम्बाई पांच फीट ६ इंच और बदन कुछ दुबला है, शायद यह असर बहुत दिनों तक कैद रहने के बाइस हो—गोकि इसे हम कैद हर्गिज़ नहीं कह सकते क्योंकि सिवाय हाज़िरबाशी के उसे किसी किस्म की तकलीफ न थी ताहम् उसके जैसे आज़ाद और खुदमुख़्तियार शख़्स को इस कदर रुकावट भी गोया हद दर्जे की रंजिश और तकलीफ़ पहुंचाती थी। उम्र इसकी ४० या ४५ बरस की होगी मगर इसके चेहरे पर इतनी उम्र मुतलक मालूम नहीं होती। इसके दाढ़ी या मोंछ का एक भी बाल सुफेद नहीं है और इन पर वह बहुत ज्यादा तवज्जह रखता और हमेशा कंघी से साफ़ और सुथरा बनाये रहता है। बदन इसका गोकि कुछ दुबला है मगर ताहम् मज़बूत, फुर्तीला और निहायत गठीला है ख़ास कर इसके दोनों बाज़ुओं की लम्बाई और पट्ठों की मज़बूती काबिलतारीफ़ है। वह अपनी पोशाक हमेशा साफ़ व सुथरी रखता और बरख़िलाफ़ अपने दूसरे साथियों के जो गोइन्दों का काम करते हैं, नफ़ासत पर ज़ियादा ख्याल रखता है। अमीरअली अपनी पगड़ी हमेश फुंदनेदार बांधता और अब कमर में एक अंगरेज़ी शाल या हलके रंग का रुमाल लपेटे रहता है जहां पेश्तर काश्मीरी शाल या रु-

माल या इस्से भी बेहतर किमख़ाब का कमरबन्द रखता था। चेहरा इसका कुछ गोरे रंगत पर है और अब भी खूबसूरती से खाली नहीं जिस्से मुझे एतकाद होता है कि इसके जवानी के बयानातों में हर्गिज़ मुबालग़ा नहीं है। माथा इसका ऊंचा और चौड़ा, आंखें बड़ी और निहायत चमकीली हैं, इनमें उस वक़्त ज़ियादा रोशनी हो जाती कि जब वह जोश में आ निहायत फ़-साहत से अपना अहवाल बयान करने लगता है। अब इसके दोनों गाल कुछ पचके हैं मगर नाक की खूबसूरती और तीखापन हनोज़ वैसाही है, इसका मुंह छोटा और दांत तमाम सुफ़ेद और बराबर हैं। ऊपर के होठ पर दोनों तरफ़ ऐसी घनी और उमदी मोंछे हैं कि जो बाज़ औकात किसी २ सर्कारी जंगी पलटन के अफ़सर के चेहरे पर नज़र आ जाती है, दाढ़ी भी वैसीही घनी सीने तक लहराती है जिसमें से एक भी बाल हर्गिज़ टूटने नहीं पाता; दरहकीकत अमीरअली की दाढ़ी का नमूना हर एक मुसोव्विर और कारीगर को अपने निगाह के रूबरू रखना चाहिये। इन सभों के सिवाय उसके सीने की चौड़ाई और नमूदारी उसके छोटे कमर पर इस कद्र खुलती थी कि जि-सके आगे अच्छे अच्छे जवानों की आंखे अब भी नीची हो जाती हैं।

मिजाज़ का यह शख्स निहायत खुशअखलाक और सलीम है बल्कि मैं कह सकता हूं कि मैंने इसकदर सहूलियत और इनसानियत बहुत कम मुसलमानों में पाई है। ज़ुबान उसकी निहायत फ़सीह और साफ़ है, गोकि बसबब फ़ार्सी के इलमियत के बाज़ वक़्त वह ऐसे अलफ़ाजों का इस्तियामाल कर बैठता है जिसके समझने में कभी २ मुझे भी दिक्कत पड़ जाती है मगर ताहम् उसको गुफ़्तगू साफ़ उर्दू में है। उसे इस बात का निहायत फ़ख़ है बल्कि वह दक्खिन या हिन्दोस्तान के चन्द हिस्सों के खराब उर्दू गुफ़्तगू पर अपनी सख़्त नफ़रत ज़ाहिर करता है। गोकि अमीरअली अपने और दूसरों के दानिश में निहायत मशहूर शख्स है मगर उसकी वह शेखी जो हनोज़ उसके दम के साथ है उसके इस गिरफ़्तारी की हालत पर ज़ेब नहीं देती

साहबो, अगर आप आंखें बन्दकर इस शबाहत का कोई शख्स ख्याल क-रिये तो बेशक अमीरअली को आप अपने रूबरू गोया खड़े पाइयेगा, उसकी इस शकल और सीधेपन को देख कर मेरे ही म्वाफ़िक आप हर्गिज़ गुमान

नहीं कर सकते कि यह शख्स खूनी है—वह खूनी कि जिसने अपने ज़िन्दगी में सात सौ शख्सों के मारने या मारे जाने में खुद मदद की है।

मैंने कहा "अमीरअली! चूंकि मैं तुम्हारी शबाहत का बयान लिख चुका, मैं अब चाहता हूं कि तुम अपने ज़िन्दगी के वारदातों का बाकी हिस्सा भी बयान करो।

उसने कहा "साहब, ताबेदार हाज़िर है, और इनशा अल्लाताला मैं आप को हर्गिज़ मायूस न करूंगा। मगर हुज़ूर ने क्यों इस कमबख्त की शबाहतका बयान किया? जो अब निहायत अबतर हालत में है। भला क्या गुलाम भी सुन सकता है कि हुज़ूर ने दस्तमुबारक से क्या इर्काम फर्माया है? उसकी गुफ़्तगू के लहजे से मुझे मालूम हुआ कि उसे इस बात का गुमान होगया था कि शायद मेरे शबाहत की तारीफ़ बउन्वान शाइस्तः न की गई हो।

मैंने कहा "अच्छा सुनो, मैं पढ़ता हूं। ज्यों ज्यों मैं पढ़ता जाता हर जुमले पर उसका चेहरा रौनक पाता जाता था। जब मैंने खतम किया उसने कहा।

"साहब आपने ठीक वैसाही बयान किया जैसा कि मैं अपने तईं शीशे में देखने पर पाता हूं। आपने कोई बात बाकी नहीं छोड़ी बल्कि बारीकियों का भी आपने बयान किया है बन्दा तो इस तारिफ़ के काबिल हर्गिज़ नहीं यह हुज़ूर की इनायत और नवाज़िश है"—यह कह कर वह उठ खड़ा हुआ और निहायत अदब के साथ झुककर सलाम कर अपनी जगह फिर बैठ गया।

मैंने कहा "नहीं, तुम्हारी बेरूनी शबाहत के बयान में मैंने कोई बात लग्वो की नहीं लिखी क्यों कि यह तो साफ़ ज़ाहिर है; मगर तुम्हारे दिलके बारे में हर्गिज़ लोगों को वैसा गुमान नहीं हो सकता जैसा कि तुम चाहते हो मगर हां वैसा तो बेशक होगा कि जिस लायक तुम हो।

उसने कहा "तो क्या साहब आप मेरे दिल को खराब समझते हैं"?

मैंने कहा "बेशक"?

अमीरअली ने कहा "मगर, मुआफ़ कीजियेगा मेरा दिल दरहकीकत ऐसा नहीं है। क्या मैंने नेक शौहर और वफ़ादार दोस्त का फ़र्ज़ अदा नहीं किया? क्या मैंने अपनी बीबी और बच्चों से मुहब्बत नहीं की कि जिन्हें उस

पर्वर्दिगार ने मुझे दिया था? और क्या अब भी मैं उनके वफ़ात पर सख़ रंज नहीं करता? वह कौन सा शख़्स है जो एक लफ़्ज़ भी अमीरअली के इज़्ज़त के बर्ख़िलाफ़ ज़बान पर ला सकता है जो हमेशा बेदाग़ रही और आइन्दे रहेगी। क्या कभी मैंने जमाअत के रिश्ते को तोड़ा है? या कभी किसी साथी से बेईमानी या बेरहमी की है। या कभी अपने कार या ईमान में फ़र्क़ लाया? या कभी किसी मज़हबी हुक्म की अदूली की है। मैं फिर भी आप से कहता हूं साहब, कि इस दुनियां के पर्दे में कोई भी ऐसा बशर नहीं है जो अमीरअली की तरफ़ इन बातों में उंगली उठा सके। अगर आप वग़ौर ख्याल फ़र्मावें तो ये बातें ऐसी हैं कि इनपर लिहाज़ रखने वाला शख़्स दुनिया में इज़्ज़त और हुर्मत हासिल करता है"।

मैंने कहा "मगर अमीरअली इन सात सौ ख़ून के बारे में तुम क्या कहते हो? अगर एक तरफ़ तुम और दूसरी तरफ़ ये सात सौ ख़ून रखकर तराज़ू में तौले जांय तो बहुत ज्यादा फ़र्क़ होगा"!!!

"आह! यह बातही दूसरी है" उसने हँस कर कहा "यह बिलकुल दूसरी बात है। शायद मैं आपको किसी तौर एतकाद नहीं दिला सकता कि मैंने ये काम अल्लाताला के मर्ज़ी से किये,। क्या मैंने इनमे से किसी शख़्स को भी मारा है? हर्गिज़ नहीं—यह फ़कत उसी का काम है अगर मैंने हज़ारों मर्तबः उनके गले में रुमाल दिया होता और मुझ में हाथी सी ताकत भी होती तो क्या मैं कभी उसकी मर्ज़ी के बगैर कुछ कर सकता था,? या कभी वे मर सकते थे? साहब, मैं जो आपसे अर्ज़ करता हूं कि वे हर्गिज़ नहीं मरते और न कभी मर सकते हैं पर चूंकि मैं किसी तौर भी इस बात पर आपको एतकाद नहीं दिला सकता, और न यह मुझे वाजिब है कि मैं हुज़ूर से मुबाहिसा करूं बेहतर है कि मैं अपना अहवाल आगाज़ करूं क्योंकि अभी मुझे बहुत कुछ अर्ज़ करना बाकी है। मैंने आपसे पहली चढ़ाई का अहवाल इस बारीकी से बयान किया है कि दूसरी चढ़ाइयों में उसे तूल देने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि अगर मैं ऐसा करूं तो साहब आप लिखते २ और आपके मुल्क वाले पढ़ते २ थक जांयगी क्योंकि मेरी हरएक चढ़ाइयों का ज़िक्र

गोया एक तवारीखही है। इस लिये आपकी इजाज़त से मैं फ़कत उन्हीं बातों का ज़िक्र करूंगा जो ज़्यादा दिलचस्प हैं और जो बसबब ज़्यादा मशहूर होने के मेरे दिल पर नक्श हैं।

मैंने कहा "बेहतर है, तुम शुरू करो, मैं बग़ौर सुनता हूं"।

"बहुत अच्छा" अमीरअली ने कहा "खुदावन्द को याद होगा कि मैंने हुज़ूर से अर्ज़ किया था कि तीन ऐय्याम चढ़ाई के तो मैंने योंही टाल दिये गो कि तीसरे मर्तबः मैं नीम रज़ामन्द था। इस चढ़ाई का ज़िक्र मैं कुछ आप से अर्ज़ करता हूं क्योंकि इसमें एक वारदात अजीब तरह की हुई जिससे आपको साफ़ ज़ाहिर होगा कि जब खुदाताला की मर्ज़ी मारने की होती है तो कोई भी शख्स चाहे कैसाही चालाक हो हर्गिज़ मौत के हाथों नहीं बच सकता।

जिस वक्त का ज़िक्र मैं आपसे कर रहाहूं मैंने लाचार होकर बद्रीनाथ और सर्फ़राज़ खां के बाद चन्द दूसरे साथियों से राब्त पैदा कर एक नया गरोह खड़ा किया, मगर मुझे उन दोनों दोस्तों के हाथ से निकल जाने का सख्त रंज हुआ। हुसैन से गोकि मैं उसे वालिद का सादिक और दिली दोस्त जान कर ज़्यादा मुहब्बत रखता था मगर बसबब ज़ईफ़ी के वह मेरे नामवरी पैदा करने की ख्वाहिश के लिये माकूल साथी न था। सो, मैंने पीर खां और मोतीराम को जिनका नाम आप पेश्तर सुन चुके हैं और जो कई चढ़ाइयों में अपनी हिम्मत और बहादुरी दिखला चुके थे, मैंने अपना मोतबिर दोस्त कायम किया। हम लोगों ने एक ऐसे चढ़ाई की मशवरत् ठहराई कि जिसमें मैं सरदार रहूं और वे दोनों मेरे मातहत दूसरे ठगों के अफ़सर हों, पचास निहायत मज़बूत, चालाक, हिम्मतवर और नौजवान शख्सों का एक पक्का गरोह कायम किया गया, सभों को पेश्तर से इत्तला कर दी गई थी, पस तमाम लोग दसहरे के कुछ दिन पेश्तर हमारे गांव की अमराई में जो निहायत घनी और बतौर जायमशवरत के इस्तियामाल की जाती थी जमा हो गये— किस सन् में सो मुझे ठीक याद नहीं है—यह मुकाम निहायत मुबारक तसौव्वर किया जाता था क्योंकि कोई भी चढ़ाई ऐसी न थी जो यहां से रवाना होने पर नाकामयाब हुई हो।

हम सब उस मुकाम पर जमा हो गये—सुबह का वक्त निहायत खुशनुमा और आस्मान बिलकुल साफ़ था और चूंकि धूप की तेज़ी से घास अभीतक पकी न थी यही जान पड़ता था गोया निहायत खूबसूरत सब्ज़ कालीन किसी ने खास हमलोगों की कमेटी के लिये बिछा दी हो। आस पास के खेत जिन्हें इन्हीं सब गांववाले जोतते बोते हवा में खूब लहरा रहे थे, जवारी के सुफ़ेद दानेदार गुच्छों पर आफ़ताब की रोशनी से आंखें तिलमिलाती थीं और उन पर ठहरने न पाती थीं। ऊंचे २ बर्गद के घने दरख्तों पर जिनके नीचे हमलोग बैठे थे चिड़ियां चहचहा रही थीं—सैकड़ों तोते इधर से उधर उड़ते थे और चहकते थे, कोई आपस में खेलते और कोई पके २ फल वगैरह खा रहे थे। किस्सा कोताह यह कि सभी चरिन्द परिन्द खुश नज़र आते थे।

मेरे वालिद और हुसेन दोनों शख्स जमाअत में अपनी तजरुबेकारी की सलाह देने के लिये मौजूद थे। शुरू कारबाई में भवानी की परस्तिश, और कुर्बानी की गई पर चूंकि मैं इन रसूमातों को एक मर्तबः पेश्तर बयान कर चुका हूं अब दुबारा कहने की कोई ज़रूरत नहीं है पस इतनाही कह देना काफ़ी है कि सगून बिचारे गये और हद्दर्जे की उम्मेद निकले; इससे हम सभों को अच्छी उम्मेद हुई; गोकि इनकी ज़रूरत मुझे बार २ समझा दी गई थी मगर मुझे हर्गिज़ उन पर एतकाद न होता था पर जब तमाम गरोह के दिल में इतनी बाइस जोश पैदा हुआ तो मैंने भी उनके साथ अपनी खुशी ज़ाहिर की।

वालिद ने तमाम लोगों को इस तरह अपना मतलब समझाया और कहा कि मैं अब ज़ईफ़ हुआ और सफ़र की तकलीफ़ और थकावट बरदाश्त नहीं कर सकता। उन्हों ने मेरी पहिली चढ़ाई का तमाम ज़िक्र लोगों को सुनाया और जो जो बहादुरी हिम्मत और अक्लमन्दी के काम मैंने अपनी सिन् से ज्यादा किये थे कह सुनाये और लोगों से यह इल्तिजा की कि आप लोग इस पर एतकाद रक्खें और इसका हुक्म इस तौर मानें गोया मैं खुद आप लोगों के साथ हूं सबसे बढ़ कर ज़रूरी बात यह है कि आप लोग किसी किसम की नाइत्तफ़ाकी को दिल में जगह न दें वरन इसका भी वैसाही बद अंजाम होगा जैसा कि पारसाल की चढ़ाई का हुआ था।

इसके बाद गरोह के तमाम लोग उठ खड़े हुए और सभों ने आपस में मश्विरत कर पाक कुल्हाड़े को हाथ लगाया और इस बात का अहद किया कि वे सब मेरी फ़र्मांबरदारी कबूल करेंगे। यह कसम ठगों के लिये निहायत सख़्त है और सभों को इस बात का पक्का एतकाद रहता है कि किसी भी किसम की हुक्मअदूली पर भवानी की सख़्त नाराज़ी और खफ़गी ज़ाहिर होती थी।

साहब, जिन बातों को मैं एक मर्तबः खुद बयान कर चुका हूं उनका ज़िक्र दुबारा करके मैं हर्गिज़ आपका वक्त ज़ाया नहीं किया चाहता, फ़कत इतनाही कहना काफ़ी है कि मैंने यह राय दी कि गरोह दक्खिन की तरफ़ रवाना हो, और जबलपूर या रायपूर तक चली जावे; वहां से पूरब या पच्छिम का रास्ता जिधर माल की ज्यादा उम्मेद हो लेना चाहिये और तब मकान की तरफ वापसी का क़दम उठाया जावे । मैंने यह भी कहा कि अभी तक खानदेश के तरफ़ हमारे मुल्क के ठग लोग नहीं गये हैं और वहां मैं ख्याल करता हूं कि ज़ियादा माल हाथ लगने की उम्मेद है क्योंकि मैं सुनता हूं कि बम्बई के सौदागर लोग अकसर अपने मालवा के मुल्क की कोठियों में अफ़ीम वगैरह उस मुल्क के पैदावार खरीदने के लिये गुमाश्तों के मार्फ़त बेशुमार रुपया रवाना किया करते हैं । आखीर में मैंने उनकी खातिर्जमा की और कहा कि मुझे बहुत कुछ उम्मेद है बल्कि इस बात का पक्का भरोसा है कि अगर आप लोग दिलोजान से मेरा कहना अमल में लावेंगे तो हमलोग चन्द माह के बाद औव्वल चढ़ाई के मानिन्द बेशुमार दौलत के साथ ब हिफ़ाज़त-वापस आवेंगे ।

वे लोग फिर उठ खड़े हुए और सभों ने दुबारा अहद किया; दरहकीकत साहब, वह मौका काबिलदीद था कि जब उन जवांमर्द लोगों ने उस कार पर हिम्मत बांधा जो शायद उम्दा तौर से खतम हो, वरना जिसका राज़ फाश होने पर बेइज़्ज़ती, मुसीबत और मलकुल मौत का मुकाबला था ।

छब्बीसवां पर्व्व।

हम लोगों की कुमेटी बर्खास्त हुई, और मैं अज़ीमा से रवाना होकर चलने की तैयारी करने लगा। मैंने उस्से यह बहाना किया कि दक्खिन के सौदागरी में जो माल मैंने पैदा किया था वह रफ़ः २ सर्फ़ हो गया और गोकि मैं तुम्हारे साथ यहां निहायत आराम व चैन से रहा जैसी कि मुझे हर्गिज़ उम्मेद न थी पर लाचार क्या करूं अगर कुछ दिन और योंही बेकार बैठा रहूंगा तो बसबब तंगदस्ती के हालत मोहताजी को आ जायगी। मेरी यह ख्वाहिश हर्गिज़ न थी कि मैं मकान छोड़ कर बाहर जाऊं मगर कारेज़रूरी से लाचार हूं। बाबाजान ने मुझे कुछ रुपये सौदागरी के लिये इनायत किये हैं और अगर मुझे इस सफ़र में कामयाबी हासिल हुई जैसी कि मुझे अपने नागपुर वगैरह के अढ़तियों के खत खतूतों से उम्मेद है तो आइन्द को मैं तुम से हर्गिज़ जुदा न होऊंगा बल्कि हमेशा के लिये बआराम और बामुहव्वत तुम्हारे साथ ज़िन्दगी बसर करूंगा।

उसने बहुत देर तक इस बात की कोशिश की कि मेरा इरादा तबदील करे, रास्ते के खतरे और मुसीबतों का ज़िक्र और मेरे इन्तिज़ारी में अपनी आइन्दा फ़ुर्कत को बयान करने लगी। मैंने उसे कहा कि इस का बन्दोबस्त बहुत दिनों से हो चुका है और अब मेरी इन्तिज़ारी लोग सागर में देख रहे होंगे जहां मेरे गुमाश्ते सौदागरी के घोड़े लेकर मौजूद होंगे। जब उसने देखा कि मेरी बातों से कुछ भी असर न पैदा हुआ तो मुझ से मिन्नत करने लगी और बोली कि अच्छा जब आप जातेही हैं तो मुझे और लड़कों को भी हमराह लेते चलिये; मुझे सफ़र में हर्गिज़ किसी तरह की तकलीफ़ आप के साथ न होगी और लड़के भी बाहर की आबो-हवा से खुश व खुर्रम रहेंगे।

मैंने यह भी मन्ज़ूर न किया। आप जानतेहीं हैं साहब, कि उसके सफ़र के गाड़ी वगैरह का खर्च तो दूर रहा उसे हमराह ले जाना बिलकुल गैरमुमकिन था, पस मैंने बहुत कुछ उज़् माज़रे सुना कर किसी किसी तरह इस इरादे से उसे बाज़ रक्खा। दूसरे दिन सुबह को जब मैं रवाना होने लगा मैंने उसे वालिद के सुपुर्द किया और निहायत मुहव्वत से सीने लगा रुकसत हुआ। च-

लते वक़ उसने न जाने कितनेही ताबीज़ और टोटकों के जंतर मंतर मेरे बाजू और गले में बांध दिये जो वह अकसर आते जाते फ़कीरों और मुल्लाओं से खरीद लिया करती थी, उसने आखों में आसू भर कर मेरा हाथ उठा बच्चों के सिर पर रक्खा और बोली कि इन्हें बर्कत देते जाइये। मैंने निहायत इश्तियाक़ से उन बच्चों को प्यार किया क्योंकि साहब, मैं उनसे बड़ी हमदर्दी और मुहब्बत रखता था।

आखिरकार मैं अज़ीमा से रुखसत हुआ। आप जानतेही हैं साहब कि घरका छोड़ना सिवाय तकलीफ़ के हर्गिज़ राहत नहीं देता, क्यों कि दिल में हज़ारों तरह के खतरों के गुमान उठा करते हैं गोकि वे दरअसल कभी जुहूर में नहीं आते। मेरी भी यही हालत थी, मगर जिसवक़ मैं अपने बहादुरलोगों के गरोह में आकर शामिल हुआ जो उसी अमराई में मेरे इन्तज़ार खड़े थे, और जिन्होंने मुझे देखतेही खुशी के साथ व आवाज़ बुलन्द मेरा इस्तकबाल किया मेरे तमाम बदगुमान हवा में उड़ गये और मेरी तबीयत अन्दर से उभड़ आई क्यों कि मेरी बरसों की उम्मेद आज पूरी हुई। अब मैं खुद मुख़्तियार था और मेरे तमाम लोग मेरी फर्माबर्दारी के लिये हाज़िर थे, मैंने कहा इनशाअल्ला अब अमीर अली का सितारा बुलन्दी पर है और बहुत दिनों तक साथ रोशनी के दुनियामें कायम और चमकता रहेगा।

औवल चढ़ाई के वक़ जो जो रसूमात किये गये थे उन्हें मैं आपसे पेश्तर अर्ज़ कर चुका हूं, वेही सब रसूमात इस मर्तबः भी किये गये। मोतीराम ने जो बद्रीनाथ की जगहपर कायम किया गया था सगून वगैरह देखे और वे खातिरख़्वाह निकले। हम लोग रवाना हुये, चन्दकोस तक वालिद और हुसैन दोनों मेरे हमराह अपने पुराने तजरूबे की नसीहत करते चले गये। मा सिवाय और बातों के उन्होंने खास कर मुझे औरतों के न मारने की सख़्त हिदायत की थी।

वालिद ने कहा "ज़माने क़दीम में औरतें हमेश छोड़ दी जाती थीं, बाज़ औक़ात बसबब उन्हीं के अकसर गरोह के गरोह छोड़ दिये जाते थे चाहे वे और तरह से निहायत उम्दे बनिज हों। हमारी सरपरस्त देवी खुद औरत हैं

उन्हें अपनी फ़िर्के की क़ुर्बानी बिलकुल नापसन्द है और इसी लिये हमेशा इस का बचाव किया जाता है। दूसरी बात यह है कि मर्दों को मर्दोंहीं का शिकार करना वाजिब है, कोई सिपाही, औरतों का मुक़ाबला नहीं करता और न कोई मर्द शरीफ़ उन पर उंगली उठाता है, पस मेरे फ़र्ज़न्द, जब तुम्हें ऐसी हसीन बीबी खुदा ने दी है तो तुम्हें कभी वाजिब नहीं कि तुम किसी औरत पर हाथ उठाओ।"

मैंने कहा "आप मेरा एतक़ाद रखिये मैं हर्गिज़ ऐसा काम करनेवाला नहीं, आप जानतेही हैं कि मेरी राय किस क़दर उन औरतों के मौत के व खिलाफ़ थी जो औव्वल चढ़ाई मे मारी गईं और आप को यह भी याद होगा कि मैं उनके मारने में शरीक न था मगर लाचार मेरे कहने को बद्रीनाथ और सर्फ़राज़खां ने न सुना तो मैं क्या कर सकता था? मुझे उनके गरोह के ख़राब अंजाम और बिचारे बद्रीनाथ की हालत पर निहायत अफ़सोस है, इसमें कुछ शक नहीं कि यह आफ़त भवानी देवी के नाराज़ी के बाइस उनपर नाज़िर हुई।

वालिद ने कहा "हां यह भी मुम्किन है मगर तुम ऐसी बातों का ख्याल हर्गिज़ अपने दिल पर मत लाओ, मैं और हुसेन दोनों ने अपने वक़्त में बहुतेरी औरतों को मारा है और तुम देखते ही हो कि उस्से कोई ख़राब नतीजा न हुआ, लेकिन जो कुछ मैंने कहा है उसपर ख्याल रखना और होशियारी और अक़्लमन्दी के साथ काम करना; सब से ज़्यादा लिहाज़ सगूनों पर रखना और भवानी देबी तुम्हें हिफ़ाज़त और कामयाबी बख़्शेंगी।

इस तरह बातें करते २ हम लोग गांव के सरहद पर पहुंच गये, हम दोनों घोड़े पर से उतर पड़े और वालिद ने मुझे गले लगाकर बिदा किया, वे उधर वापस गये और इधर मैं घोड़े की पीठ पर सवार हो अपने लोगों के हमराह रवानां हुआ।

ठगी के क़ायदे के मुवाफ़िक़, जब तक औव्वल बनिज न हो ले कोई शख़्स न तो हजामत बनवा सकता और न पान खा सकता था, और चूंकि इस्से बहुतों को तकलीफ़ होती आप ख्याल कर सक्ते हैं कि हम किस क़दर ज्यादा निगाह हर जानिब को रखते और जहां कहीं हम लोग ठहरते या जिस

गांव के करीब से गुज़रते हमारे लोग बनिज की तलास में हरदम घूमा करते थे। चार दिन तक तो कोई भी शिकार हाथ न लगा, पांचवें रोज़ बमुश्किल एक बनिज काबिल कुर्बानी के दस्तयाब हुआ। इस बीच में बहुतेरे मुसाफ़िरों से मुलाकात हुई, कोई अपने मकान को जाता और कोई वहां से वापस किसी काम को आता था पर चूंकि इत्तिफाकिया हर एक गरोह के साथ औरतें थीं मुझे लाचार होकर वालिद के हुक्म के लिहाज़ से उन्हें छोड़ देना पड़ा।

पस जैसा कि मैं आप से अभी अर्ज़ कर चुका हूं पांचवें दिन अलस्सुबह हम लोग एक चौराहे पर पहुंचे; देखते क्या हैं कि हम से कुछ फ़ासले पर दाहिने हाथ की सड़क से नौ मुसाफ़िरों का एक गरोह चला आता है, ये लोग अशराफ़ जान पड़ते थे इनमें से तीन शख्स टट्टुओं पर सवार और बाकी पैदल चले आते थे। हम लोगों को इस बात से निहायत खुशी हासिल हुई कि वे लोग भी उसी रास्ते से चले जिधर हम जानेवाले थे। हम लोग कस्दन् इस बहाने से खड़े होगये कि गोया रास्ते से नवाकिफ़ हैं और उनके बराबर आने पर उनसे रास्ता दर्याफ़्त किया। उन्होंने कहा "बस यही रास्ता ठीक है;" और गोकि उन्हें हमारे गरोह की ज्यादती पर ताज्जुब हुआ ताहम् उन्होंने बखुशी अपना इरादा उस मुकाम के हमराही तक ज़ाहिर किया जहां हम लोग उस दिन मञ्जिल खतम करनेवाले थे। मैं उस शख्स से जो उनमें सब से अशराफ़ नज़र आता था बातचीत करने लगा। उसने पूछा कि "आप लोग कौन हैं और कहां तशरीफ़ ले जाते हैं?" मैंने कहा हम लोग सिपाही हैं और हिन्दोस्तान से नागपूर को अपनी नौकरी पर जाते हैं। मेरे पूछने पर उसने जवाब दिया कि हम अपने भाई के साथ जो घोड़े पर सवार हैं मय चन्द दोस्त और नौकरों के यात्रा करने निकले हैं, हम लोग इन्दौर से आते और बनारस को जा रहे हैं, वहां कुछ कपड़े और किमखाब वगैरह खरीदने का इरादा है, वहां इस काम को भी अंजाम देंगे और तीरथ का नहाना वगैरह भी होजायगा"।

मैंने ख्याल किया, ओह! ये लोग बिलाशक दौलतमंद हैं और इनके पास ज़रूर नकद माल होगा, ये लोग सूरत तबदील कर सफ़र करते हैं। अब वक्त

ज़ाया करने का मौका नहीं है क्योंकि ये लोग अभी चौराहे पर मिले हैं और इन्हें हमारे साथ किसी ने देखा भी नहीं है अगर हम इनका काम फ़ौरन् तमाम करेंगे तो कोई भी हम पर शक वो शुबहा न करेगा, पस जितना जल्द हो सके इस काम को अंजाम देना चाहिये। इसी गरज़ से मैं पीछे ठहर गया और पीरखां को जो सब के पीछे था अपना इरादा सुनाया उसने दूसरे से कहा और योंहीं यह बात थोड़ी देर मे तमाम गरोह के कान मे पहुंच गई। मैं इस बात को देख कर निहायत खुश हुआ कि ज्योंहीं उन्हें इस बात की खबर लगी त्योंहीं हर एक शख्स अपने अपने मुकाम पर जा लगा याने फ़ी मुसाफिर के पीछे तीन ठग हो गये और बाकी के तमाम लोगों ने गरोह को चारो तरफ से घेर लिया ताकि कोई शख्स भाग कर के भी न बच सके। मैं इस रास्ते को खूब जानता था क्योंकि पहिली मर्तब हम लोग इसी राह से गुज़रे थे, और फिर वह ठग ही क्या जो एक मर्तबः का देखा हुआ रास्ता भूल जाय। मैं यह भी जानता था कि इर्द गिर्द की ज़मीन बिलकुल उजाड़ व बीरान है मगर कुछ दूर जाकर एक दर्या ऐसा पड़ता है जिस्के किनारों पर सरों का जंगल निहायत घना लगा है और जहां हम लोग लाशों को बाआसानी झाड़ियों में छिपा सकेंगे। दर्या किनारे पहुंचने पर उस शख्स ने जिस्से मैं बातें कर रहा था ठहरने की इल्तिजा की, और कहा "हम लोग आधीरात के चले हैं और मैं निहायत थक गया हूं दम भर आराम किया चाहता हूं"। मैंने कहा "बहुत बेहतर"। आप जानते हैं कि यही मेरे दिल की खाहिश थी, पस मैं घोड़े से उतर पड़ा और उसे पानी पिला कर फिर उन लोगों में आ मिला जो सब जमा हो कर एक जगह बैठे थे, वे सब मुसाफिर बैठे हुये जल्दी जल्दी कुछ खाना खा रहे थे और मेरे तमाम ठग उनके इर्द गिर्द अपने अपने घात से बैठे और खड़े थे। मैंने देखा कि भटोटों के हाथ में रूमाल तैयार है और अनकरीब था कि झिर्नी देऊं इतने ही में शुक्र अल्ला ताला का कि मैंने दूर से चन्द आदमियों की आवाज़ सुनी। बेहतर हुआ कि मैंने झिर्नी न दी वर्न जब कि हम लोग लाशों के कपड़े उतारते रहते तो ये दूर के मुसाफिर आ पड़ते। इस में कुछ शक नहीं कि वे लोग एक निगाह

देखतेही निकल भागते और फिर हमारी गिरिफ़ारी गैरमुम्किन न होती। मगर हमारी खुशकिस्मती ने हमें बचाया। जैसा कि मैं पेश्तर बयान कर चुका हूं मैंने ताअम्मुल किया और थोड़े ही अर्से बाद चौदह मुसाफिर ठीक वहीं पर आ पहुंचे जहां हम लोग बैठे थे। इसमें हर किस्म के लोग थे जो एक दूसरे कि हिफाज़त के लिये रास्ते में हमराह हो गये थे। मैंने उन सभों को भी साथ ही खतम करने का इरादा किया जो हम लोग बाआसानी कर सकते थे, मगर वे लोग उसी दम हमें बाआसानी अपना काम करने के लिये छोड़ कर चल दिये। मैंने एक न एक बहाना निकाल कर अपने उन बनिजवाले मुसाफिरों को तब तक रोक रक्खा जब तक वे दूसरे मुसाफिर इतनी दूर निकल जावें जहां से आवाज सुन न पड़े, पस जब मैंने देखा कि सब सामान दुरुस्त है मैने तमाखू मांगा और यही इशारा मुकर्रर हो चुका था क्योंकि इस पर किसी किस्म का शक व शुबहा होने का खतरा न था। मैं उस शख्स के पीछे जा खड़ा हुआ जिस्से कि मैं बातें करता था और मैने अपना रूमाल तमाखू मांगतेही उसके गले में दिया। गोकि तीन बरस से मेरा रस छूटा हुआ था मगर रूमाल के डालते ही हाथ ऐसा मजबूत बैठा कि वह शख्स बात की बात में मुर्दा होकर कदमों पर आपड़ा। मैने अपना काम खतम किया और दूसरों कि तर्फ़ निगाह उठाया, देखता क्या हूं कि फ़कत एक शख्स अभी तड़फड़ा रहा है पर उस्की तकलीफ भी फौरन् रफ़ा की गई। मैने लूघों से कहा कि फौरन् अपना काम करो और उनमें से एक ने कहा—

"क्या आपने नहीं देखा कि दूलम औ चार शख्स यहां पहुंचते ही सामने की झाड़ी में गये हैं? उन लोगों ने कब्र तयार कर रक्खी होगी"।

और दरहकीकत ऐसा ही था कि इधर तो वे मुसाफिर हमसे बातें कर रहे थे उधर उनके लिये कब्र खोदी जाती थी।

हम लोग उन लाशों के कपड़े उतारने में इस कदर मशगूल थे कि दो मुसाफिर अचानचक आ गये और किसी ने भी कुछ ख्याल न किया। वे हमारा यह काम देखते ही ऐसे खौफ में आगये कि मैं उसे कभी भूल नहीं सकता।

वे दोनों वहीं के वहीं जड़ होगये, मुंह से उनके एक भी लफ्ज न निकला; वे कभी हमारी ओर कभी मुर्दों की तरफ खड़े होकर देखने लगे।

मैंने उन दोनों के पास आकर कहा "कम्बख्तो मौत के लिये तयार हो। तुम लोगों ने हमारा काम देख लिया है और अब सिवाय तुम्हारी मौत के हमारे हिफाजत की कोई दूसरी तरकीब नहीं है"।

उनमें से एक ने हिम्मत बांधकर कहा "साहब, हम लोग मर्द हैं और जब हमारा वक्त आही गया तो मरने से हर्गिज खौफ नहीं खाते"। इतना कहकर उसने मुझ से निगाह मिला तलवार खींच ली। यह शखस निहायत लम्बा और ताकतवर था और तमाम हथियारों से कसा था इस लिये मैंने उसपर एकबारगी हमला करना वाजिब न समझा।

मैंने कहा "तो खैर फकत एक शर्त पर मैं तुझे छोड़ सकता हूं कि तूभी ठग होकर हमारे गरोह में शरीक हो जा, तेरी अच्छी तरह खातिर होगी और तुझे बहुत कुछ फायदा होगा।

"कभी नहीं" उसने ललकार कर कहा "यह कभी नहीं होसकता कि मैं दुनिया में यह बदनामी सहूं कि बहादुर राजपूतों के औलाद में हो कर तिलकसिंह ने खूनियों का साथ दिया और उनकी बदबख्त कौड़ी ली! अगर मेरी मौत है तो अभी क्यों न हो? तुमलोग बहुत हो, पर जो कोई मर्द तुम्हारेमें हो तो सामने आवे और इसी बालू के मैदान में एक हाथ मैं भी अपने बचाव में चला देखूं" इतना कह उसने तलवार खींचली और मुकाबिल में खड़ाहोगया।

मैंने कहा "मैंही वह शख्स हूं" गोकि तमाम गरोह ने एक साथ मुझे मना किया और कहा कि यह भारी ज्वान है, मगर मैंने न माना और कहा "देख खबरदार! अब एक मर्तबः जमीन और आस्मान की तरफ निगाह करले क्योंकि अल्लाह जानता है कि अब तू यहां से जीता न बचेगा"।

उसने ललकार कर कहा "आ बे छोकड़े, मगर शर्त यह है कि हमारा तेरा मुकाबला बाईमान हो, अपने लोगों से कह दे कि कोई दखल न दे और तब देख कि क्या नतीजा होता है?"

मैंने सबों से कहा "भाइयो, सुन रक्खो इस बीच में कोई दखल मत देना हमारा इस्का मुकाबिला अकेले होने दो, उस दूसरे शख्स से तुम्हारी जो मर्ज़ी हो करो"। लोगों ने फ़ौरन् रुमाल देकर उसका काम तमाम किया।

ज्योंही उसने अपने उस साथी का यह नतीजा देखा त्योंही तलवार उठा कर मुझपर झपटा और बोला "यह क्या दग़ाबाज़ी है? चाहे इसके बाद अब मेरी भी मौत हो मगर मैं सिपाहियों की मौत मरूंगा और न कि उस कम्बख़्त कुत्ते की तरह"।

साहब, मैं आपसे पेश्तर अर्ज़ कर चुका हूं कि मैं हर किस्म के हथियार के फन् में कमाल था—शुक्र है उस्ताद का कि उसने मुझे ऐसी तर्बीयत दी थी और मैने भी इन चीजों के रख्न में हर्गिज़ ढिलाई न की थी जो हर मर्द बशर को ज़रूर है, न जाने किस वक़् कैसा काम पड़ जावे। मेरे पास वही तलवार थी जिस्की नव्वाब सलीखां ने इतनी तारीफ़ की थी और मुझे वह हिम्मत दिल में उभड़ आई जो हर मर्दसिपाह को अपने पुख़्ते हथियार के हाथ में रहने से होती है।

साहब, मैं कह चुका हूं कि वह राजपूत मुझ पर तलवार लेकर झपटा। उस्के पास ढाल न थी इस्से मुझे ज्यादा सुबीता था मगर वह क़द में ऊंचा और मज़बूत था, ताहम् ये बातें हुन्र और चालाकी के मुक़ाबिल महज़ नाचीज़ हैं।

उसने निहायत गुस्से के साथ बड़े ज़ोर से मुझपर हमला किया, चोट पर चोट मैं अपनी ढाल और तलवार पर रोकता जाता और खुद कोई भी वार न करता था। वह मेरे चारो तरफ़ पैंतरा बदलता, कभी दहिने और कभी बांये पैर पर खड़ा हो जाता और बाज औक़ात काट भी करता था मगर मैं उसी जगह खड़ा था क्योंकि मैं खूबजानता था कि इस तरह के उछल कूद से खास कर बालू में वह फ़ौरन् थक जायगा।

अखिरकार उसका दम फूल गया और वह खड़ा होकर मेरी तरफ़ एक टक देखने लगा और बोला "कम्बख़्त, कुत्ते के बच्चे! तू वहां से न टलेगा"?

मैंने कहा "कम्बख़्त तू और तेरा बाप! बस तेरी मौत आगई यह कह मैं उस पर झपटा। वह गाफ़िल था, मेरे टूटतेही उसने तलवार चलाई जिसे मैंने

ढाल पर रोक एक हाथ ऐसा मारा कि मेरी तलवार उसके गर्दन में आधी दूर तक घुस गई। वह गिर पड़ा और उसके जख़्म और मुंह से खून चलने लगा।

पीरखां ने आवाज़ दी "शुक्र खुदा ताला का! शाबास आपने खूब काम तमाम किया" और वह दौड़ कर मुझ से बगलगीर हो गया।

अभी वह राजपूत मरा न था। उसमें हनोज़ इतनी ताकत थी कि वह ज़मीन पर हाथ टेक कर उठ बैठा और शैतान की म्वाफिक बड़ी २ आंखें फाड़ मेरी तरफ़ देखने लगा। उसने बोलने की बहुत कोशिश की, होंठ तो उसके हिले मगर बसबब ज्यादा खून बहने के आवाज़ मुतलक न निकली।

मैंने कहा "बस तुम लोगों में से एक शख़्स इसका काम तमाम करो, इसने बेशक बहादुरी की है और इसे फ़ौरन् इस तकलीफ़ से रिहाई देना चाहिये"।

पीरखां ने मेरी तलवार ले कर उसके कलेजे के पार कर दी, कुछ देर तो वह छटपटाया मगर फ़ौरन् उसकी जान क़ालिब से अलग हो गई।

मैंने कहा "इसे भी हटाओ, वक़्त फुजूल ज़ाया न करना चाहिये"।

लूघों ने उसे हाथ पैर धर कर उठा लिया ताकि खून न लगे और ले गये, दूसरों ने थोड़ा सा सूखा बालू उस मुकाम पर जहां वह गिरा था डाल दिया; पस थोड़े ही अर्से में हम लोग यों रवाना हो पड़े गोया कुछ हुआही न था।

मेरी इस बहादुरी और फुरती का नमूना देखने के बाद गरोह के तमाम लोग गोया मेरी परस्तिश करने लगे। उन्होंने कहा कि आज तक यह बात कभी सुनने में न आई थी कि किसी ठग ने इस तरह तलवार की लड़ाई में किसी ऐसे सिपाहीमुसाफिर पर फतहयाबी पाई हो। इस अहवाल के सुनने से हर ज़ईफ या नौजवान को हदस पैदा होगी। मैं उन लोगों की यह तारीफ़ सुन सुन कर फूला न समाता था"।

जो कुछ माल हम लोगों को उस सौदागर और उस के भाई से दस्तयाब हुआ फ़कत उतनाही इस चढ़ाई के लिये काफ़ी था। दो तीन शख़्सों की राय हुई कि लौट चलना चाहिये मगर बाकी के लोगों ने आगे बढ़ने की सलाह दी इससे हम लोगों ने आगे कदम उठाया।

मैंने कहा "यह निहायत शर्म और अफ़सोस की बात होगी कि हम लोग खुशकिस्मती के वक़्त पीछे पैर लौटावें"।

साहब, हम लोग इसी तरह बराबर सागर तक चले गये और रास्ते में १८ और मुसाफ़िरों को मारा मगर कोई भी गहिरा माल हाथ न लगा; कहीं दस कहीं पंद्रह और किसी किसी के पास हद्द सौ रुपया निकला।

सागर का शहर निहायत आबाद था और अब भी वैसाही है, इसके करीब एक झील बहुत बड़ी हुसैनसागर के म्वाफ़िक़ वाक़ः है। अकसर सुबह के वक़्त निहायत खुशनुमा ठंढी ठंढी हवा बहा करती है। हम लोगों ने शहर के नज़दीक झील के किनारे डेरा खड़ा कर दिया।

चार दिन तक हम लोग वहां रहे। हर रोज़ बाज़ार में घूमते और अकसर भठियारों की दूकान पर जा कर हुक्का पानी करते थे; एक भठियारे से पीरखां की जान पहिचान बहुत ज्यादा थी और हम लोग मुसाफ़िरों का सूराग़ पाने के लिये उसे बहुत कुछ दिया करते थे। उसने इकरार किया कि मैं मुसाफ़िरों की तलाश में रहूंगा; तीसरे दिन शाम के वक़्त मैं अपने छोटे खेमें के दर्वाज़े पर बैठा हुक्का पी रहा था और शाम के हवा की बहार देखता था कि पीरखां मेरे पास आकर कहने लगा—

"मीरसाहब, भठियारा ईमानदार है, उसने एक साहूकार का पता लगाया है जो हमारे ही रास्ते से जायगा और जो अनकरीब एक हफ़्ते के बाद यहां से रवाना होनेवाला है; वह कहता है कि यह शिकार पक्का समझिये लेकिन आप लोग यह मुकाम छोड़ कर शहर से दस बारह कोस आगे जा टिकिये और दो तीन शख़सों को मेरे पास खबर ले जाने के लिये छोड़ दीजिये"।

"अलहम्दुलिल्लाह" मैंने कहा "वह बड़ा नेक शख़्स है। उसकी सलाह ज़रूर मानना चाहिये, कल अलस्सुबह हम लोग रवाना हो जायंगे और अपने तीन शख़सों को जो दौड़ने में खूब मज़बूत हों खबर लाने जाने के लिये यहां छोड़ देंगे।

उसने कहा "मगर वह हमारे कामयाब होने पर बहुत ज्यादा ईनाम मांगता है"।

मैंने कहा "कुछ पर्वाह नहीं, अगर वह सच कहता है तो कामयाबी होने पर यह क्या बड़ी बात है ?"

पीरखां ने कहा "ओह! इसका हर्गिज़ खौफ़ मत कीजिये, जब तक आप उसे दीजियेगा वह ज़रूर ईमानदारी के साथ काम करेगा।"।

"तो फिर उसे क्या देना चाहिये, वह कितना मांगता है ?"

उसने कहा "दो सौ रुपये, बशर्तें कि हम ५०००) पावें—और ४००) अगर हम दस हज़ार पावें; योंही समझ लेना चाहिये"।

मैंने कहा "पीरखां, अगर साहूकार दौलतमन्द है तो जितना वह मांगता है कुछ बड़ी बात नहीं——जाओ, उससे कह दो कि हम लोग उसे उस का हक़ ज़रूर देंगे"।

उसने कहा "बहुत अच्छा, मैं जाता हूं अगर वापस न आऊं तो समझना कि मैं उसी के यहां रह गया"।

उसने अपने साथ ले जाने के लिये दो तीन शख्सों को चुन लिया और कुछ कपड़ों की गठड़ी बांध रवाना हुआ, जब तक वह सड़क के मोड़ पर न घूमा मैं वहीं खड़ा उसे देखता रहा।

सत्ताईसवां पर्व्व ।

हम लोग चार दिन तक बराबर कई गांव से होते हुये चले गये कोई शिकार हाथ न लगा। दरहकीकत मैं इस काहिली और देर से आरिज़ होने लगा था कि पांचवें दिन सुबह को उनमें से एक शख्स जिन्हें हम पीछे खबर लाने के लिये छोड़ आये थे आन पहुंचा और बोला—"साहब, पीरखां ने आप को सलाम कह कर यह अर्ज़ की है कि अब आप जल्द वापस आवें क्योंकि बनिज हाथ पर चढ़ चुका और शहर से जल्द रवाना होनेवाला है"।

मैंने पूछा "तू उसकी बाबत कुछ जानता है ?"

उसने कहा "नहीं मीरसाहब मैं नहीं जानता, मैं भठियारे के यहां रहता था, वह जमादार साहब से बनिज के बारे में अकसर बातें किया करता था मगर यह भेद मुझ पर ज़ाहिर न किया गया।

मैंने कहा "खैर तू जरा दम लेकर हमारे साथ चलने को तयार हो। हम लोग सागर से कितनी दूर हैं?"।

उसने कहा "जिस रास्ते से मैं आया हूं चौदह कोस है, मगर दूसरे रास्ते से जिसे मैं जानता हूं इसका आधा भी न पड़ेगा। मैंने पूछा तो क्या हम लोग ग्राम तक पहुंच जांयगे?

उसने कहा "बेशक अगर आप चाहें तो दो पहर तक भी पहुंच सकते हैं, चलिये मैं आप को ले चलता हूं"। वह हमें जंगल की राह से ले चला, अगर मैं अकेला होता तो हर्गिज़ रास्ते का पता न पाता। खैर ग्राम होते होते हम लोग सागर पहुंचे और बादज़ां उसी पुराने मुकाम पर डेरा लगाने के मैं भठियारे के पास पहुंचा जहां मुझे अपने दोस्तों से मिलने की उमेद थी।

पीरखां वहां बैठा था मुझे देखतेही उठ कर बगलगीर हो गया और बोला। "मीरसाहब मुझे इस बात का खतरा था कि शायद मेरे आदमी से आप की मुलाकात न हो मगर शुक्र है अल्लाताला का कि आप आ गये।"

मैंने भठियारे से सलाम कर पीरखां से पूछा "मैं ख्याल करता हूं कि यही हमारे लायक दोस्त हैं"?

भठियारे ने कहा "जी हां यह गुलाम पीरू हमेशा अपने दोस्तों की खिदमत करने के लिये हाज़िर रहता है"।

मैंने कहा "दोस्त मैं हर्गिज़ आपका हक्क भूल नहीं सकता आप इस सादिक ठग के कहने पर एतकाद रखिये। क्या यह बनिज पक्का है?"

पीरखां ने कहा "बेशक इसे भी वैसाही पक्का समझिये कि जैसे वे थे जो हमारे हाथ तले पड़ चुके हैं, कल उसकी सागर से आखिरी मुलाकात समझिये।"

मैंने कहा "अलहमदुलिल्लाह! बेहतर है तुम क्या समझते हो? वह अच्छा बनिज है न?"।

भठियारे ने कहा कि "वह सात या आठ हजार का बनिज है, मगर बिलकुल नक़द"।

मैने कहा "दोस्त बहुत अच्छा है मगर तुम भी हमारे साथ क्यों नही चलते ? तुम तो खासे भले जवान हो"।

उसने हँसकर जवाब दिया "आह ! मैं यह कार खूब कर चुका हूं बल्कि दो मर्तबः गनेशा जमादार के साथ बाहर चढ़ाइयों पर गया था, आप उसे जानते हैं ?"।

मैंने कहा "हां मैने उसका नाम सुना है वह मशहूर जमादार है"।

भठियारे ने कहा "हां है तो, मगर वह निहायत संगदिल है, अगर सच पूछिये तो मुझे उसकी चालचलन बिलकुल नापसन्द है क्योंकि वह अपने बनिज से निहायत बुरे तौर से पेश आता है पस इसी लिये मैंने वह कार छोड़ दिया और अब जैसा कि आप देखते हैं यहीं बैठे २ छोटे मोटे काम किया करता हूं और कभी २ कुछ न कुछ मिलही जाता है"।

मैंने कहा "तुम बहुत अच्छा करते हो, मगर खबरदार रहो बिचारे ठगों को गिरफ़ारी की धमकी देकर रुपया कभी मत ठगना"।

मेरे इस कहने पर वह कुछ सिटपटाया मगर फिर सम्हल कर साथ दिलेरी के कहने लगा कि मैंने आज तक ऐसा कमीना काम कभी नहीं किया"।

पीरखां ने मुझे इशार्तन् मना किया और फिर मैंने उस बात का ज़िक्र न छेड़ा क्योंकि हम लोग हर तौर से उसके इख़ियार में थे ।

फिर मैंने कहा "तो क्या हम लोग कल सुबह को रवाने होंगे" ?

उसने कहा "हां, ऐसाही कीजिये; साहूकार जबलपूर को जाता है। बेहतर होगा कि आप लोग कुछ रोज़ तक उस्से मुलाकात न करें, शायद वह खबरदार हो जाय क्योंकि हालही में चन्द मशहूर शख्स रास्ते में गुम होगये हैं"।

मैंने पीरखां से कहा "तो अब हम लोगों का यहां कुछ काम नहीं है और मैं भी थका मांदा हूं, चलो अपने डेरे को चलें। हम लोग दो भेदियों को यहां रहने के लिये भेज देंगे ताकि अगर ज़रूरत हो तो साहूकार के रवानगी की खबर हम लोगों को पहुंचा दे।

खैर दो शख़्सों को उनका काम सुपुर्द कर हम लोग भठियारे से बिदा हुये। रास्ते में पीरखां ने मुझ से कहा "मीरसाहब! आपने उस बदज़ात को खूब पहिचाना, उसने रुपया पैदा करने का यही ढंग इख़्तियार किया है। यह बदज़ात खुद साहूकार होरहा है क्योंकि कोई भी गरोह ठगों का सागर से ऐसा नहीं गुज़रने पाता कि जिस्से यह अपना चन्दा वसूल न करता हो"।

मैंने कहा 'तो फिर इसका भी काम तमाम करें ऐसे कम्बख़्त को हर्गिज़ जीता न छोड़ना चाहिये—यह बदज़ात आराम से घर बैठा रहता है, न तकलीफ़ उठावे न हाथ पैर हिलावे और सब से ज़्यादा हिस्सा ले लेता है। इस्के जीने की क्या ज़रूरत है? तुम्हारी राय उसके मारने के बारे में क्या है?"

उसने कहा "हां अच्छी बात है, मगर वह कौवे के म्वाफ़िक होशियार है उसे शहर के बाहर क्योंकर लाना चाहिये"।

मैंने कहा "ओह! इसका बन्दोबस्त बआसानी हो जायगा। वह काफ़िर रुपये का बहुत लालची है"।

पीरखां ने कहा "यह तो आप सच कहते हैं"।

मैने कहा "तो पीरखां, बस ले लिया है। डेरे पर पहुंचतेही मैं किसी आदमी के हाथ उसके पास एक पैग़ाम भेजता हूं। तुम देखोगे कि अगर पैग़ाम पाते ही वह न चला आवे तो अमीरअली को औव्वल दर्जे का बेवक़ूफ़ समझना"।

उसने हँस कर कहा "बहुत अच्छा, मैं आपकी यह तरकीब देखूंगा मगर फिर भी आप से कहता हूं कि वह बदज़ात निहायत चालाक है। मैंने उसे सिवाय दिन के वक़्त रात को हर्गिज़ बाहर निकलते नहीं देखा"।

मैंने एक नौजवान लड़के से जो हमेशा मेरी खिदमत में हाज़िर रहता था कहा "जंगली! तू पीरू भठियारे को जानता है न?"

उसने कहा "बेशक वही न जिसके पास आज शाम को हुज़ूर बैठे थे। मैं उसका मकान जानता हूं क्योंकि जब मैं बाज़ार में आँटा खरीदता था तो मैंने हुज़ूर को उसके दूकान पर बैठे देखा था"।